झलक 2023

पत्रिका

ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
देहरादून

झलक

2023

संरक्षक

नीरज गुर्जर
निदेशक, ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा

संयोजक
मनबर सिंह, अधीक्षण सर्वेक्षक

संपादक
अरुण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक
दीपक कुमार, हिंदी अनुवाद अधिकारी

कला संपादक
पायल आर्य, सर्वेक्षक

‘ झलक ’ में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं , संपादक मण्डल विभाग का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1 -	संपादकीय	अरुण कुमार	1
2 -	जी.टी.एस. से सी.ओ.आर.एस. ज्योडेटिक इन्फ्रास्ट्रक्चर: एक सफरनामा (लेख)	वीरेन्द्र दत्त सकलानी	2
3-	भारत-अतीत और आज(लेख)	ममता गुलेरिया, पत्नी स्व0 श्री सुरेन्द्र सिंह गुलेरिया,अधिकारी सर्वेक्षक	7
4-	तू नदिया की वो तरुणी धारा (कविता)	रुचि प्रिया	11
5-	डर के आगे जीत है (संस्मरण)	शिव सिंह रावत	12
6-	छाले पड़े हैं पांव में (कविता)	गौरव आनन्द	15
7-	कोशिश करने वालों की (कविता)	नरेश सिंह सन्तोषी	17
8-	आजादी का अमृत महोत्सव (निबंध)	शिखा उनियाल	18
9-	पंडित नैन सिंह (कविता)	पायल आर्य	20
10-	मेरा पहला सर्वे फील्ड (संस्मरण)	डी0पी0एस0माटा	21
11 -	मेरे पापा (कविता)	किरन मनूरी	24
12 -	काश (लेख)	पायल आर्य	25
13-	तू ही बड़ा है	सुबेदार मेजर प्रेम, पिता पायल आर्य	29
13	ऐ काश !(कविता)	रुचि प्रिया	30
14	भावनाओ का आंचल (कविता)	क्षितिज प्रकाश	31
15	जीवन को जीना-एक कला यह भी (प्रेरक प्रसंग)	दीपक कुमार	32
16	मेरी फिक्र (कविता)	पायल आर्य	34
17	रद्दी का ढेर (संस्मरण)	डी0पी0एस0माटा	35
18	मंजिल राह ताक रही है (कविता)	रुचि प्रिया	37
19	मेरी केरल यात्रा (यात्रा वृतांत)	अरुण कुमार	38

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

दूरभाष/ Phone:0091-0135-2654528
फैक्स/ Fax No.: 0091-0135-2656789
ई-मेल/E-mail: grb.soi@gov.in
EPABX No. 0135-2657112-15

ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा
GEODETIC & RESEARCH BRANCH
डाक बॉक्स सं. 77, Post Box No.77
17 ई. सी रोड, 17 E.C. ROAD
देहरादून-248001 (उत्तराखंड)
Dehradun-248001 (Uttarakhand)

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष विषयक है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग की ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा अपनी राजभाषा पत्रिका 'झलक' का प्रकाशन करने जा रही है। जैसा कि सर्व विदित है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग सम्पूर्ण भारतीय भूभाग के मानचित्रण के लिए उत्तरदायी है। समय पर विभाग में प्रकाशित होने वाली इन पत्रिकाओं के माध्यम से हम अपनी राजभाषा में मानचित्रण कला में आत्मनिर्भरता का प्रमाण देते चले आ रहे हैं। ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा इस विभाग के पुराने निदेशालयों में से एक है।

भारत के महान अन्वेषक पंडित नैन सिंह, किशन सिंह आदि तथा भारत के महान गणितज्ञ राधानाथ सिकदर इस निदेशालय से ही संबद्ध थे। उनकी कर्मठता और विद्वता से वर्तमान पीढ़ी भी अवगत है। इस तरह से इस निदेशालय की कार्य संस्कृति अनुसंधनात्मक और अन्वेषणात्मक है।

आज भी इस निदेशालय में नमामि गंगा, कोर्स (कांटिन्युसली आपरेटिंग रिफरेंस सिस्टम) जैसे अनुसंधनात्मक और अन्वेषणात्मक कार्य प्रगति पर है।

मैं आशा करता हूँ कि 'झलक' के प्रस्तुत अंक में इन विषयों को छूती हुई रचनाओं का समावेश किया जायेगा।

पत्रिका को इस रूप में तैयार करने का जिन लोगों ने सहयोग दिया है, मैं उन्हें बधाई और शुभकामनायें देता हूँ।

(सुनील कुमार)
संयुक्त सचिव व
भारत के महासर्वेक्षक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

दूरभाष/ Phone:0091-0135-2654528
फैक्स/ Fax No.: 0091-0135-2656789
ई-मेल/E-mail: grb.soi@gov.in
EPABX No. 0135-2657112-15

ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा
GEODETIC & RESEARCH BRANCH
डाक बॉक्स सं. 77, Post Box No.77
17 ई. सी रोड, 17 E.C. ROAD
देहरादून-248001 (उत्तराखंड)
Dehradun-248001 (Uttarakhand)

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि विशिष्ट क्षेत्र की ज्योडीय एंव अनुसंधान शाखा राजभाषा में अपनी पत्रिका 'झलक' का प्रकाशन करने जा रही है। राजभाषा पत्रिका ऐसा मंच है, जहां अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा दिखाने और संवारने का अवसर मिलता है।

ज्योडीय एंव अनुसंधान शाखा इस जोन का एक विशिष्ट निदेशालय है जहां की कार्य संस्कृति विविधतापूर्ण है। यहां ज्वारभाटा, गुरूत्वीय प्रेक्षण उपग्रह सर्वेक्षण आदि सम्बन्धी प्रेक्षण निरन्तर होते रहते हैं। इस कारण से इस निदेशालय का कोई भी प्रकाशन विविधता पूर्ण होगा। मुझे आशा है कि 'झलक' के माध्यम से लोगों को मानचित्रण के विविध आयामों से सम्बन्धित ज्ञानवर्धक एवं रोचक लेख पढ़ने को मिलेगें।

साथ ही साथ संस्मरण, कविता आदि साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभाओं से भी अवगत होने का अवसर मिलेगा। मैं उन लोगों का हृदयतल से आभारी हूँ जिन्होनें अपनी व्यस्तताओं के बीच से समय निकाल कर पत्रिका के लिए रचनायें तैयार की। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनायें देता हूँ।

(डॉ.यु.एन.मिश्रा)
अपर महासर्वेक्षक
विशिष्ट क्षेत्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

दूरभाष/ Phone:0091-0135-2654528
फैक्स/ Fax No.: 0091-0135-2656789
ई-मेल/E-mail: grb.soi@gov.in
EPABX No. 0135-2657112-15

ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा
GEODETIC & RESEARCH BRANCH
डाक बॉक्स सं. 77, Post Box No.77
17 ई. सी रोड, 17 E.C. ROAD
देहरादून-248001 (उत्तराखंड)
Dehradun-248001 (Uttarakhand)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा अपनी राजभाषा पत्रिका 'झलक' का प्रकाशन करने जा रही है। जैसा कि सर्व विदित है कि हमने गत वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव पूरे उत्साह के साथ मनाया था। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अमृत महोत्सव से सम्बन्धित लेख को इस बार की 'झलक' में दिया जा रहा है। हमारे निदेशालय में राष्ट्रीय महत्व की कई परियोजनाओं पर काम चल रहा है। हमारे अधिकारी और कर्मचारी पूरे मनायोग से इन परियोजनाओ को मूर्त रूप देने में लगे हैं। ऐसे में राजभाषा में रचनात्मक सहयोग देना अवश्य ही उनके लिए चुनौती पूर्ण रहा होगा। यह उनकी राजभाषा के प्रति प्रेम ही है कि उन्होंनें यह चुनौती स्वीकार की और 'झलक' के लिए पठनीय रचनात्मक सामग्री तैयार की। गत वर्ष 14-15 सितम्बर 2022 को सूरत में सम्पन्न हुए द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर दिए गए संदेश में देश के माननीय गृह मंत्री महोदय ने हिन्दी की सम्पर्क भाषा के रूप में महत्ता को रेखांकित किया था। वास्तव में हिन्दी की अन्य भाषाओं को आत्म सात करने की प्रवृत्ति ही इसकी व्यापकता का मूल मंत्र है। अगर हम अपने तकनीकी और वैज्ञानिक कार्यों को राजभाषा में अभिव्यक्त करेगें तो हमारी राजभाषा और अधिक समृद्ध और व्यापक होगी। वास्तव में विभिन्न विभागों में प्रकाशित होने वाली राजभाषा पत्रिकाओं का यही उद्देश्य है।

'झलक' अपने इन उद्देश्यों में सफल होगी, मैं इस बात की हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ।

(नीरज गुर्जर)
निदेशक
ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा

संपादकीय

14 सितम्बर 1949 को भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गयी। संविधान की धारा 343 के अनुसार 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी', लेकिन हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता मिलने से पहले ही राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिली थी। इसका प्रमाण हमारे ही विभाग के महान अन्वेषक पंडित नैन सिंह की डायरियां है जो उस समय की प्रचलित हिन्दी तथा देवनागरी लिपि में लिखी गयी थी। यह इसबात की पुष्टि करती है कि अगर हमें अपनी हिन्दी का प्रचार प्रसार करना है, तो आम बोलचाल की हिन्दी का प्रयोग करने में हिचकना नहीं चाहिए। भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 में लिखा भी गया है -

''संघ का यह कर्तव्य होगा कि हिन्दी का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की समाजिक, संस्कृति केसभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रवृत्ति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं सूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों का आत्मसात करते हुए; और जहां आवश्यक या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी वृद्धि सुनिश्चित करें।''

इस तरह से इस अनुच्छेद में भाषाओं में समावेशी प्रवृत्ति के प्रति स्वीकार्यता का भाव है। प्रस्तुत पत्रिका 'झलक' के संपादन करते समय भी हिन्दी की इसी समावेशी प्रवृत्ति का ध्यान रखा गया है। विज्ञान एवं तकनीकी में विकास के साथ -साथ मानचित्रण तकनीक में भी बदलाव आ रहा है। नई तकनीक और नई विधियों को राजभाषा में व्यक्त करना भाषाविदों के सामने बहुत बड़ी चुनौती है। हमारे रचनाकारों ने अपनी रचनाओं पर धैर्यपूवर्क काम किया और हर तरह की बाधाओं को पार करते हुए सहज और पठनीय भाषा में अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया। यह उनकी मेहनत है कि 'झलक' इस रूप में आ सकी। आपकी प्रतिक्रियाओं और टिप्पणीयों से ही यह पता चलपायेगा कि वे अपनी मेहनत में कहां तक सफल हो पायें हैं।

(अरूण कुमार)
अधिकारी सर्वेक्षक
संपादक

लेख

जी.टी.एस. से सी.ओ.आर.एस.

ज्योडेटिक इन्फ्रास्ट्रक्चरः एक सफरनामा

वीरेन्द्र दत्त सकलानी , अधीक्षण सर्वेक्षक (सेवानिवृत्त)

भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारत का सबसे पुराना विभाग है जिसकी स्थापना सन् 1767 में हुई थी और तब से आज तक भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने सर्वेक्षण एवं मानचित्रण के क्षेत्र में एक अविस्मरणीय उन्नति की है।

इस विभाग में प्रथम ज्योडेटिक इन्फ्रास्ट्रक्चर की शुरूआत 10, अप्रैल 1802 को प्रारम्भ हुई थी। लैम्बटन ने सैंट थॉमस माउंट से ज्योडेटिक ट्राईंगुलेशन का कार्य प्रारम्भ किया था। ज्योडेटिक ट्राईंगुलेशन को प्रारम्भ करने का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी के आकार को नापना एवं मानचित्रण कार्य हेतु हारिजान्टल कन्ट्रोल बिन्दुओं की स्थापना करना था। ज्योडेटिक ट्राईंगुलेशन के इस कार्यालय को कर्नल लैम्बटन एवं सर जार्ज एवरेस्ट ने सम्पन्न कराया था तथा सन् 1830 में पृथ्वी के आकार की गणना की गई तथा यह निष्कर्ष निकाला गया कि पृथ्वी का आकार अंडाकार दीर्घवृत्ताभ (ओवलेट एलप्सिॉएड) के सामान है जिसकी सेमी मेजर एक्सिस 6377301.243 मीटर एवं सेमी माईनर एक्सिस 6356100.231 मीटर है।

सन् 1802 से सन् 1990 तक इस विभाग के सर्वेक्षकों ने पुराने पांरपरिक तरीके एंव पुराने यन्त्रों जैसे थ्योडोलाईट, चेन, स्टीलवैंड, ई.डी.एम. आदि यन्त्रों से सर्वेक्षण का कार्य किया। सन् 1990 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग में पहली बार दो जी.पी.एस. यन्त्रों की खरीद हुई जिसने सर्वेक्षण कार्य की काया ही पलट दी। इस जी.पी.एस. रिसीवर में एक रिसीवर बॉक्स ,एक एंटीना बॉक्स तथा एक ट्राईपाड था। डाटा एक कैसेट में रिकार्ड होता था । एक जी.पी.एस. सेट का वजन लगभग 20 से 25 किलोग्राम तक था।

जी.पी.एस. से मेरा एक गहरा रिश्ता रहा है। 1989 में सर्वेक्षक बनने के बाद मेरा पहला क्षेत्रीय कार्य सन् 1990 में अंटार्कटिका महाद्वीप पर सम्पन्न हुआ जिसको जी.पी.एस. के द्वारा किया गया ।

सन 1990 में जी.पी.एस. तकनीकी द्वारा हॉरिजॉन्टल कंट्रोल स्थापित करने की शुरूआत हुई तथा सबसे पहले सन 1990 में इन दो जी.पी.एस. रिसीवरों द्वारा 10वें अंटार्कटिक अभियान में अंटार्कटिका महाद्वीप में हॉरिजॉन्टल कन्ट्रोल स्थापित किया गया । 10वें अंटार्कटिक अभियान में भारतीय सर्वेक्षण विभाग का चार सदस्यीय दल पहली बार सम्मिलित हुआ था और मैं भी 10वें अंटार्कटिका अभियान दल का एक सदस्य था। इस तरह से जी.पी.एस. के साथ मेरा सम्बन्ध सन् 1990 से ही जुड़ गया था।

अंटार्कटिक महाद्वीप पर जी.पी.एस. द्वारा हॉरिजॉन्टल कन्ट्रोल की स्थापना करना भारतीय सर्वेक्षण विभाग के लिए एक मील का पत्थर था। सन् 1991 के पश्चात् भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने और अधिक जी.पी.एस. रिसीवरों की खरीद की तथा पुराने पांरपरिक तकनीक को छोड़कर जी.पी.एस. तकनीकी द्वारा कार्य करना प्रारम्भ किया। सन् 1991 से सन् 2000 तक दुर्गम स्थानों में, जैसे कि अंडमान निकोबार द्वीप समूह, लक्ष्यद्वीप, पूर्वी उत्तर राज्यों के दुर्गम स्थानों में, हिमाचल प्रदेश के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मानचित्रण हेतु जी.पी.एस. द्वारा हॉरिजॉन्टल कन्ट्रोल की स्थापना की गई, इन सभी क्षेत्रों में मैंने भी जी.पी.एस. द्वारा क्षेत्रीय कार्य किया।

सन् 2001 तक भारत में अन्य कई विभागो ने जी.पी.एस. खरीद लिए तथा जी.पी.एस. द्वारा कार्य करना प्रारम्भ कर दिया, अब भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती थी कि देश के सभी मानचित्रों को डबल्यू जी एस- 84 डेटम पर ट्रांसफार्म करना क्योंकि हमारे सभी मानचित्र एवरेस्ट डेटम पर थे तथा जी.पी.एस. द्वारा प्रेक्षित निर्देशांक डबल्यू जी एस- 84 डेटम पर ।

अतः सन 2001 में ट्रांसफॉरमेशन पैरामीटर निकालने का कार्य प्रारम्भ हुआ जिसके लिए लगभग 300 पुराने जी.टी.एस. स्टेशन पर 24 घटें का जी.पी.एस. प्रेक्षण किया गया तथा एवरेस्ट डेटम एवं डबल्यू जी एस- 84 डेटम के बीच में ट्रांसफॉरमेशन पैरामीटर निकाले गए। जी.पी.एस. तकनीक की सबसे बड़ी सुंदरता यह है कि यह पूरे संसार में एक ही डेटम डबल्यू जी एस- 84 पर निर्देशांक देता है, इससे हजारों किलोमीटर की दूरी नापी जा सकती है तथा इसके द्वारा रात-दिन कार्य किया जा सकता है।

सन् 2005 के बाद ट्रांसफॉरमेशन पैरामीटर की सहायता से पुराने सभी मानचित्रों को, जो कि एवरेस्ट डेटम पर थे, डबल्यू जी एस- 84 डेटम पर ट्रांसफार्म कर दिया गया। ट्रांसफॉरमेशन पैरामीटर द्वारा परिवर्तित किए गये निर्देशांकों की परिशुद्धता लगभग 3 से 5 मीटर तक ही थी तथा इन पैरामीटर्स को केवल 1:25,000 स्केल तक के मानचित्रों को ट्रांसफार्म करने के लिए ही इस्तेमाल किया जा सकता था। अतः सन् 2005 में अति परिशुद्ध निर्देशांकों की आवश्यकता महसूस हुई जिस कारण जी.सी.पी. लाईब्रेरी प्रोजेक्ट का जन्म हुआ।

जी.सी.पी. लाईब्रेरी प्रोजेक्ट को दो चरणों में सम्पन्न कराया गया, पहले चरण में लगभग 300 जी.सी.पी. स्टेशन का निर्माण किया गया तथा इन पर 72 घण्टे का जी0पी0एस0 प्रेक्षण किया गया। द्वितीय चरण में लगभग 2200 जी.सी.पी. का निर्माण किया गया तथा इन पर 6 से 8 घण्टे का जी.पी.एस. प्रेक्षण किया गया। जी.सी.पी. लाइब्रेरी प्रथम चरण का प्रोजेक्ट 2006 तथा 2007 में सम्पन्न हुआ तथा द्वितीय चरण का प्रोजेक्ट 2008 से 2014 में संपन्न हुआ।

जी.सी.पी.लाईबे्ररी प्रोजेक्ट से सम्पूर्ण राष्ट्र के समेकित निर्देशांकों की आपूर्ति हुई तथा यह राष्ट्र की विकास योजनाओं में एक मील का पत्थर साबित हुआ। जी.सी.पी. लाईब्रेरी द्वारा स्थापित किए गये चांदों के द्वारा सर्वेक्षण का कार्य करने के लिए कम से कम 2 से 4 घण्टे तक जी.पी.एस. प्रेक्षण, डाटा प्रोसेस एवं नेटवर्क को

समायोजित भी करना पड़ता था जिसमें की अधिक समय, अधिक मानवशक्ति एवं अधिक धन का व्यय होता था, आज के उपभोक्ता को कम समय में तथा कम खर्च में उच्च परिशुद्ध निर्देशांकों की आवश्यकता है।

देश इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है कि प्रत्येक उपभोक्ता को सर्वेक्षण स्थल पर ही उच्च परिशुद्ध निर्देशांकों की आवश्यकता है उपभोक्ता के पास इंतजार करने का समय नहीं है तथा तकनीकी का इस्तेमाल करके उपभोक्ता की मांग को पूरा किया जा सकता है। अतः भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने सन् 2020 में कांटिन्युसली आपरेटिंग रिफ़रेंस सिस्टम (सी.ओ.आर.एस.) इन्फ्रास्ट्रक्टर स्थापित करने की शुरूआत की।

सतत संचालित सन्दर्भ स्टेशन (कांटिन्युसली आपरेटिंग रिफ़रेंस सिस्टम) (सी.ओ.आर.एस.) क्या है?

सतत संचालित सन्दर्भ स्टेशन (कांटिन्युसली आपरेटिंग रिफ़रेंस सिस्टम, सी.ओ.आर.एस.) जियोडेटिक गुणवत्ता वाले जी.एन.एस.एस. रिसीवर और एंटेना है, जो सन्दर्भ स्टेशन (रिफरेंस स्टेशन) के रूप में एक स्थान पर स्थायी रूप से स्थापित होते हैं और जिसके बहुत सटीक पूर्व-निर्धारित निर्देशांक (भौगोलिक स्थान) होतें हैं। ये सन्दर्भ स्टेशन लगातार जी.एन.एस.एस. आंकड़े एकत्रित करते हैं, और इन्टरनेट के माध्यम से डाटा को सी.ओ.आर.एस. नियन्त्रण और प्रसंस्करण केन्द्र (केन्द्रीय सर्वर) जो कि ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा देहरादून में स्थित हैं, तक पहुंचाते हैं। केन्द्रीय सर्वर आने वाले आंकड़ों को प्रोसेस करता है तथा जी.एन.एस.एस. रिसीवर द्वारा प्रेक्षित निर्देशांकों में सुधार करने हेतु संशोधन का मान निकालता है, जिसे उसी क्षण (रियल टाइम) में उपयोगकर्ताओं को, जिनके पास एक जी.एन.एस.एस. रोवर (अर्थात जीपीएस यंत्र) हो इन्टरनेट द्वारा उपलब्ध कराया जाता है। जिससे कि उपयोगकर्ता उसी क्षण अपने जी.एन.एस.एस. रोवर के सटीक निर्देशांक प्राप्त कर सके।

सर्वर पर, डाटा को भविष्य में उपयोग के लिए भी संग्रहीत किया जाता है, और पंजीकृत उपयोगकर्ता को डाउनलोड के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

सी.ओ.आर.एस. नेटवर्क के मुख्य घटक:

1-सतत संचालन सन्दर्भ स्टेशन (सी.ओ.आर.एस.)

2-सी.ओ.आर.एस.नियन्त्रण और प्रसंस्करण केन्द्र (केन्द्रीय सर्वर)

3-डाटा संचार प्रणाली, इन्टरनेट

4-उपयोगकर्ता जिसके पास एक जी.एन.एस.एस.रोवर हो जो कि आर.टी.के.सर्वेक्षण के लिए सक्षम हो सी.ओ.आर.एस.नेटवर्क के उत्पाद और सेवाएं पंजीकृत उपयोगकर्ताओं के लिए सी.ओ.आर.एस.नेटवर्क के निम्नलिखित उत्पाद और सेवाएं उपलब्ध हैं

रीयल टाइम सेवाए:

3 से 4 सेमी से बेहतर सटीकता के साथ एन.आर.टी.के.सेवा, जिसके द्वारा

उपयोगकर्ता रियल टाइम (कुछ ही क्षण) में अपने रोवर के 3 से 4 सेमी से बेहतर सटीक निर्देशांक निकाल सकता है। यह सेवा प्रधानमंत्री ड्रीम प्रोजेक्ट स्वामित्व योजना में बहुत ही लाभकारी है। कई राज्यों में स्वामित्व योजना के लिए इस सेवा का उपयोग किया जा रहा है।

30 से 40सेमी से बेहतर सटीकता के साथ डी.जी.पी.एस.सेवा

यह सेवा उन उपयोगकर्ताओं के लिए लाभकारी जिन्हें अधिक एक्यूरसी की आवश्यकता नहीं होती, इस सेवा का उपयोग जी.आई.एस.डाटाबेस आदि बनाने के लिए किया जा सकता है। उपरोक्त सेवाओं का उपयोग करने के लिए उपयोगकर्ता का पंजीकरण होना और उपयोगकर्ता के पास एक आर.टी.के.सक्षम जी.एन.एस.एस.रोवर का होना आवश्यक है।

<u>अन्य आनलाईन सेवाएं:</u>

रिफ्रेन्स डाटा शॉप (आर.डी.एस.) से स्थैतिक जी.एन.एस.एस. सर्वेक्षण करने वाले उपयोगकर्ताओं और वैज्ञानिक समुदाय के लिए सी.ओ.आर.एस. और वर्चुअल रेफरेंस स्टेशन का जी.एन.एस.एस. डाटा उपलब्ध कराया जाता है।

<u>ऑनलाइन पोस्ट प्रोसेसिंग सेवा-</u> जिन उपयोगकर्ताओं को जी.एन.एस.एस. डाटा पोस्ट प्रोसेसिंग की जानकारी नहीं है वह ऐसी सेवा का लाभ उठा सकते हैं। इन सेवाओं का उपयोग करने के लिए उपयोगकर्ता का पंजीकरण होना आवश्यक है।

सी.ओ.आर.एस. नेटवर्क के द्वारा सर्वेक्षण कार्य तेज, सटीक, प्रभावी और कुशल तरीके से किया जा सकता है इससे वास्तविक समय (रियल टाइम) में तथा कुछ ही क्षणों में उपयोगकर्ता अपने रोवर के सटीक (एक्यूरेट) निर्देशांक निकाल सकता है। सी.ओ.आर.एस. को रिफ्रेन्स या मास्टर स्टेशनों के रूप में उपयोग किया जा सकता है जिससे सर्वेक्षण कार्यों के लिए रिफ्रेन्स स्टेशन स्थापित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। रिफ्रेन्स स्टेशनों का डाटा आर.डी.एस. (रिफ्रेन्स डेटा शॉप) से डाउनलोड किया जा सकता है। पंजीकृत उपयोगकर्ता आॅनलाईन पोस्ट प्रोसेसिंग सेवा के माध्यम से जी.एन.एस.एस. सर्वेक्षण डेटा प्रोसेस कर सकते हैं। सी.ओ.आर.एस. उत्पादों और सेवाओं की सुविधायें हर समय उपलब्ध है। सी.ओ.आर.एस. नेटवर्क की स्थापना सर्वेक्षण के क्षेत्र में एक क्रांति है।

मेरा और जी.पी.एस. या जी.एन.एन.एस. का सम्बन्ध तीन दशकों के अधिक का है। मैनें पहले भी जिक्र किया है कि मैनें ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा द्वारा खरीदे गये दो जी.पी.एस. रिसीवर (डबल्यू एम 1.2) का उपयोग वर्ष 1990 में 10वें अंटार्टिका अभियान में किया था। जिनका वजन लगभग 20 से 25 किलोग्राम तक था। जी.पी.एस. डाटा एक कैसेट में रेकार्ड होता था। घंटों तक जी.पी.एस. प्रेक्षण के बाद तथा डाटा प्रोसैस करने पर किसी स्टेशन के सटीक निर्देशांक निकले जाते थे। आज जी.पी.एस. या जी.एन.एन.एस. रिसीवर का वजन 3 से 4 किलोग्राम से

भी कम हो गया है और वह (जी.पी.एस. या जी.एन.एन.एस. रिसीवर) इतना स्मार्ट हो गया कि सी.ओ.आर.एस. नेटवर्क की सहायता से कुछ ही क्षणों में उपयोगकर्ता किसी भी स्टेशन के सटीक निर्देशांक निकाल सकता है। मुझे गर्व है कि मैंने अपने सेवाकाल में जी.पी.एस. या जी.एन.एन.एस. तकनीकी को इन बुलंदियों पर पहुँचते देखा है। मैं बूढ़ा होता गया और जी.पी.एस. जवान। आने वाले अगले दशक में शायद जी.पी.एस. या जी.एन.एन.एस. तकनीकी बूढ़ा हो जाएगा तब शायद सी.ओ.आर.एस. नेटवर्क की भी आवश्यकता न पड़ें और हमारे मोबाइल फोन पर ही सटीक निर्देशांक मिलने लग जाएं। मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि हम उस दिन को जरूर देखेंगें।

लेख

भारत-अतीत और आज

ममता गुलेरिया,पत्नी स्व0 श्री सुरेन्द्र सिंह गुलेरिया, अधिकारी सर्वेक्षक

भारत एक अत्यन्त प्राचीन देश है। दूर-दूर तक जब हम अतीत में झांकते हैं तो हम वेद और उपनिषदों के उस संसार में जा पहुंचते हैं जहां ज्ञान की गंगा से आसेतु हिमालय अभिसिंचित होता था। कितना विचित्र विरोधाभास है- कहाँ आदि मानव के पशुवत जीवन का वैज्ञानिक बखान और कहाँ ज्ञान व दर्शन का स्वर्णिम विज्ञान-भारत वह वैदिक काल।

मुझे तो ऐसा लगता है कि आज का विश्व जैसे अपने भस्मासुर सरीखे ज्ञान ओर विकास की अवधारणा में पिसा जा रहा है। भौतिक सुखों की चाह से उत्पन्न पर्यावरण संकट ने पूरे विश्व पर भय की काली चादर फैला दी है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, सागर अपने तटवर्ती नगरों और द्वीपों को निगलने के लिये आतुर दिखाई दे रहा है। रूस-यूक्रेन की भयानक तस्वीरें,चीन का राजनीतिक बलात्कार, सर्दियों में भी तपता यूरोप, अमेरिका का भयावह बर्फीला तूफान और बाढ़ तथा अपना दरकता हुआ जोशीमठ व अन्य पहाड़ ये सब क्या संकेत दे रहे है, क्या ऐसा आभास नहीं होता है कि ज्ञान और विज्ञान के इस देवता की चिंता के साथ-साथ सम्पूर्ण सृष्टि भी सती हो जायेगी।

ऐसा ही हुआ कभी उस अनदेखे पूर्व काल में। प्रलय की वह कहानी भी शायद मानव ने ही रची होगी। बचा एक ऐसा मनीषी जो आध्यात्मिकता के सच्चे सुख से अवगत था। दिनकर जी की इन काव्य पंक्तियों में वर्णित विचार धारा उसके अंतस में शायद तब तक भी गूंजती रही होगी।

रसवंती भू के मनुज का श्रेय, नहीं यह विज्ञान कटू आग्नेय, श्रेय उसके प्राण में बहती प्रणय की वायु, मानवों के हेतु अर्पित मानवों की आयु जो भरे मनुज के हदय में स्निग्ध सौम्य भाव पुनीत, श्रेय वह विज्ञान का वरदान।

आज के मानव कुल के उस आदि पुरूष मनु ने जब नई सृष्टि की रचना की होगी तब उसकी नींव वेदों में वर्णित श्रेष्ठ नैसर्गिक व आध्यात्मिकता में सनी लोक मंगल की भावना पर आधारित जीवन पद्धति पर ही रखी गई होगी।

यह लोकमंगल की भावना ही अतीत में (और आज भी) भारत की महानता का मुख्य कारण है। वास्तव में सत्य और अंहिसा पर टिकी इस भारतीय संस्कृति के मूल में लोक कल्याण की ही भावना निहित है, यही सर्वश्रेष्ठ भारत की सर्वश्रेष्ठ पहचान है। कैसा था वह सर्वश्रेष्ठ भारत- इसका वर्णन श्री जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी 'भारत महिमा' नामक कविता में बहुत सुन्दर ढंग से किया है।

विस्तारभय से उस कविता की कुछ ही पंक्तियाँ मैं यहां प्रस्तुत कर रही हूँ।

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखाते घर-घर घूम।।
यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टी।
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि।।

यह भी एक तथ्य है कि विश्व की सभ्य जातियां बर्बर व हिंसक कबीलों द्वारा पराजित होती रही है
किन्तु जैसे वेगवती नदियां जब समुद्र में मिलती है तो वे सागर-जल को क्षोभित तो करती है पर अन्त में उसी में विलीन भी हो जाती है। इसी तरह भारत में हूण, शक, यवन, मुगल आदि ने अपनी विजयी पताका फहराई पर अन्त में सभी इसी भारतीय संस्कृति सागर में विलीन होकर रह गये। हजारों साल तक भारत पर शासन करने वाले मुसलमान और लगभग सौ साल के अपने शासन में अग्रेंज भी भारतीय संस्कृति की सराहना करते हुए नजर आये।
इकबाल के शब्दों में-

है कुछ बात कि हस्ती मिटती नहीं मिटाए।
सदियों रहा दुश्मन दौरे जहाँ हमारा ।।

आज भारत के मुसलमान सच्चे राष्ट्र भक्त मुसलमान है। सभी कालों में और सभी जगहों पर कुछ दुष्प्रचारक होते ही हैं जो केवल अपने स्वार्थ-साधन के लिये जाति, धर्म या प्रांतीयता के आधार पर लोगों में फूट व वैमनस्य के बीज बोते रहते है, अन्यथा मंदिर, मस्जिद, तीर्थ-हज, संध्या -नमाज आदि भी कहीं एक दूसरे के आड़े नहीं आती। आर्य व द्रविड संस्कृतियों में भी कोई मौलिक अंतर नहीं है। यह भिन्न-भिन्न कालों में विकसित मानव समुदाय है जो युगों-युगों से साथ-साथ रह रहें है और एक ही भारतीय संस्कृति का आँचल थामे हुए है। उत्तर भारतीय जिस ईश्वर -भक्ति के रंग में रंगे हैं उसका जन्म द्रविड़ संस्कृति से ही माना जाता है।
लोक प्रसिद्ध है कि -

‘भक्ति द्राविड़ उपजी लाये रामानन्द ।
परगट कियो कबीर ने सप्त द्वीप नव खंड।।

अतः आज सभी भारत वासियों विशेषतः सभी राजनीतिक, सामाजिक नेताओं चाहे वे किसी भी राजनीतिक दल वर्ग या धर्म से जुड़ें हुए क्यों न हों यदि किसी एक बात पर सहमत होने की आवश्यकता है तो वह यही है कि सबका ध्येय एक ‘महान भारत’ के निर्माण का हो। आज भी कुछ ऐसे सरफिरे हैं जो दिखावे के

लिये तो राष्ट्र को सर्वोपरि घोषित करते हे किन्तु कहीं तो अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा और कहीं धन व भौतिक साधनों को समेटने की कुत्सिन मनोवृति के कारण जाति, धर्म व राष्ट्र की ओट लेकर इन्हीं के पतन करने से बाज़ नहीं आते। अपने मोबाईल पर आये भ्रामक उत्तेजक एंव नफरत भरे भाषणों से तो आप परिचित ही हैं, ऐसे में टेलीविजन चैनल भी क्यों पीछे रहें उन कुछ चैनलों के तार भी कहीं न कहीं उन अदृश्य पैसा फेंक छदम नेताओं से जुड़े रहते है जो 'महान भारत' के सन्दर्भ में 'परोक्षेकार्यहन्तारं,प्रत्यक्ष प्रिये वादिनम' की भूमिका का निर्वाह करते है।

यह हर्ष का विषय है कि सुप्रीम कोर्ट ने अभी-अभी (जनवरी 23) इस पर संज्ञान लेते हुए नफरती भाषण को एक ऐसे राक्षस की संज्ञा दी है जो सबको निगल जायेगा। कोर्ट ने ऐसे समाचार एंकरों के खिलाफ भी नाराजगी प्रकट की है और इस बात पर जोर दिया है कि खुद पर नियन्त्रण कैसे किया जा सकता है।

और भी एक खुश खबरी यह है कि इन तमाम विरोधाभासों के होते हुए भी आज का नया भारत एक नई अंगड़ाइयाँ ले रहा है। आज का भारत सभी लोक मंगल से जुड़ी ऊँचाईयों को छूने के लिए प्रयासरत है। विश्व भर में मानवीय जीवन मूल्यों को स्थापित करने में व्यापक योगदान दे रहा है। विश्व के प्रायः सभी देश आज भारत द्वारा प्रसारित योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, सॉफ्टवेयर, संचार टेक्नोलॉजी द्वारा लाभान्वित हो रहे है।

कोरोना काल में दी गई औषधि सहायता के लिए कई देश भारत के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर चुके है। यूक्रेन रूस युद्ध में संदर्भ में दुनिया के सारे देश भारत की शान्ति नीति की सराहना कर रहे है। यहां तक कि पाकिस्तान जैसे शत्रु राष्ट्र भी भारत की विदेश नीति के कायल हो चुके है। आज भारत की युवा शक्ति जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी सफलता का परचम लहरा रही है। धीरे-धीरे ही सही, पर भारत की एक ऐसी छवि विकसित हो रही है जो पूरी मानवता को शन्ति और समृद्धि का वरदान देने में सक्षम है, हो भी क्यों न आखिर-हमारी संस्कृति का मूल मन्त्र भी तो यही है।

सर्वेभवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माँ कश्चिददुःखभाग्भवेत् ।।

सर जॉर्ज एवेरेस्ट का स्केच

(पायल आर्य)

कविता

तू नदिया की वो तरुणी धारा

रुचि प्रिया,प्रवर श्रेणी

लिपिक,यू0के0जी0डी0सी0

तू नदिया की वो तरुणी धारा, अपनी धुन में
मचलती चलती,
रुकती कण-कण को भिगोती फिर मुस्कुरा के
आगे बढ़ जाती ।
वो तृप्त से कण निहारते विस्मित से,
कुछ तृप्तता का आलिंगन कर कल्पतरू को
जन्म देते,
कुछ अपलक निहारते कुढ कर ।
तू नदिया की वो तरुणी धारा, इन सब से अंजान
फिर नए
कणों को सिंचने निकल पड़ती ।
कुछ नादां कुछ अब भी अतृप्त कण तुझे
पहचाने भी तो कैसे पहचाने
तेरी अनवरत ऊर्जा श्रृंखला का राज भला कैसे
जाने ?
तुझे तो बस अनगिनत कणों को सिंचते सबको
तृप्त कर जाना है,
तू नदिया की वो तरुणी धारा, अनवरत बहते
जाना है ।

संस्मरण

डर के आगे जीत है

शिव सिंह रावत, अधिकारी सर्वेक्षक (सेवानिवृत्त)

यह वृतांत 2001-2002 क्षेत्रीय वर्ष का है। मैं सर्वेक्षक के पद पर दल संख्या 82 (वर्तमान में सैटेलाईट ज्योडेसी विंग) से क्षेत्रीय कार्य के लिए टीआरपी (ट्रांसफामेसन पैरामीटर) के क्षेत्रीय कार्य में श्री आर0एस0नेगी, अधिकारी सर्वेक्षक के अधीन कार्यरत था। मेरे साथ अन्य तीन साथी सर्वेक्षक भी क्षेत्रीय कार्य में कार्यरत थे।हम चारों को शिविर अधिकारी श्री आर0एस0नेगी के पर्यवेक्षण में 24 घंटे का जीपीएस प्रेक्षण का कार्य अलग-अलग स्टेशनों पर करना था। मुझे राजस्थान एवं गुजरात सीमा पर पालमपुर जिल में घोड़ी स्टेशन पर 24 घंटे के निरन्तर जी पी एस प्रेक्षण की जिम्मेदारी दी गयी थी। जो कि सुबह 05:30 से अगली सुबह 05:30 तक करनी थी।हम सरकारी वाहन से अपने दल के साथ 1:50,000 नक्शे तथा भौगोलिक विवरण के सहारे सही स्थान पर पहुंच गये थे। गांव के किनारे टैन्ट लगाकर हमने सफर की थकान मिटाई तथा हल्का नाश्ता कर मैं एक नियमित खलासी (वर्तमान में एमटीएस) को साथ लेकर सरपंच के पास गये। मैंने उनको विभाग तथा विभाग द्वारा कराये जाने वाले कार्य की जानकारी दी और यह बताते हुए कि हमें गांव के छोर पर जंगल से घिरी पहाड़ी पर 24 घंटे का प्रेक्षण करना है जो घने जंगलों से घिरी हैऔर जहाँ का रास्ता हमें नहीं मालूम था, मैंने उनसे अनुरोध किया कि हमें उस जगह तक पहुँचाने के लिए 4-5 स्थानीय मजदूर उपलब्ध करवाने की कृपा करें।मैंने उन्हें यह भी बताया कि ये लड़कें हमारा सामान लेकर पहाड़ी पर जायेगें तथा हमारे साथ ही रहेगें तथा कार्य समाप्ति पर सामान के साथ गांव वापस आएंगें। जिसके एवज में हम निर्धारित दैनिक मजदूरी के हिसाब से भुगतान करेगें। सरपंच जी तैयार हो गये और एक दो घंटों में मजदूरों की व्यवस्था कर देने के आश्वासन के साथ हमें कैम्प में जाने का अनुरोध किया। हम लोग कैम्प में आकर दिन का भोजन कर ही रहे थे कि इस बीच चार लड़कें कैम्प में आ गये और उन्होनें बताया कि उन्हें सरपंच ने भेजा है। मैंनें उन लड़कों अगले दिन सुबह 05:30 पर घोड़ी पहाड़ पर मशीन लगाने की जानकारी दी। फिर उनसे सलाह-मशविरा कर हमने तय किया तथा दोपहर 3 बजे दल बल के साथ तथा सूखा राशन, पानी का ड्रम तथा टैन्ट लगाने का समान लेकर पहाड़ की चढ़ाई शुरू दी। जैसा नाम वैसा पहाड़, बिल्कुल खड़ी पहाड़ी। जैसे तैसे घने जंगलों के बीच से होते हुएहम लोग 4 घंटे बाद लगभग 7:15 शाम को पहाड़ी पर पहुंच गये। गर्मी का मौसम था, सो दिन का

उजाला अभी बाकी था। हमारे दल में मैं तथा एक खलासी तथा चार लोकल मजदूर थे।शेष एक खलासी तथा कुक गांव में स्थित बेस कैम्प में अन्य सामानों की देखभाल रह गये थे।

पहाड़ी पर पहुंचने पर घोड़ी स्टेशन का पुराना सीमेन्ट का बना प्लेटफार्म सुरक्षित पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। फिर सभी ने मिल कर तंबू लगाने के लिए की जगह बना कर उसको खड़ा किया। चूंकि हमें यहां पर अगले दिन सुबह 05:30 से चैबीस घंटें का प्रेक्षण कार्य के लिए 2 रातें काटनी थी अतः लोग जंगल से सूखी लकड़िया इकठ्ठा कर लाए तथा जलानी शुरू कर दी। जिससे खाना भी बने तथा जंगली जानवर भी न आए। रात घिरने को आई मैं मशीन की तैयार कर ही रहा था कि तभी दल का एक खलासी मेरे पास आकर बदहवासी में बोला ''साहब गांव के लड़के बोल रहे थे कि कुछ समय पहले ही गांव का एक आदमी बगल वाली चट्टानों के बीच शहद निकालते हुए फिसल कर मर गया था और आज तक वहीं पर उसकी लाश पड़ी है । वह हर रात में पहाड़ीसे चिल्लाता रहता है तथा गावं तक उसकी आवाज पंहुचती है । यह भूतहा जगह है साहब।'

वे सारे लड़के गांव वापस चले गये। मैं भी अचानक सदमे की स्थिति में आ गया। फिर मैंने खुद को सम्भाला और साथी खलासी को समझाया कि अब इतना सामान लेकर हम दोनों नीचे जा नहीं सकते और हिम्मत रखे, एक से भले दो। वह उम्र में मेरे से काफी बड़ें थे। परंतु मेरी बातों से उनमें भी बहुत उम्मीद जगी और खुद को सम्भालते हुए बोले साहब ' मैं एक ब्राह्मण आदमी हूँ । मैं अग्नि के समक्ष पूजा पाठ करता रहूंगा आप टैन्ट के अन्दर मशीन से देखते रहना। ऐसा कुछ नहीं होगा बस डरना मत , वरना डर हावी हो जाएगा।' यही बीज मंत्र मैने पकड़ लिया था कि डर के आगे जीत है। रात में 9:15 बजे का समय था । हम दोनों खिचड़ी खाकर चाय की चुस्किंया ले रहे थे कि अचानक मेरे कानों में किसी आदमी की फुस फुसाने की आवाजें आयी। मैं घबरा गया कि क्या अभी से ही वह आदमी चिल्लाने लगा! लेकिन धीरे-धीरे इन आवाजों में किसी की सीटियां और किसी का 'साहब-साहब' बोलना स्पष्ट होने लगा था। मैने देखा, नीचे घने जंगल में टार्च की बत्तियां जल बुझ रहीं थीं तथा आवाजें हमारी ओर बढ़ रही थी। मैं सोच में पड़ा था कि इतनी रात में हमारी तरफ कौन आ रहा होगा। तभी साथी खलासी ने चिल्लाते हुए उनको ललकारा तो पता चला कि वे वही चार मजदूर लड़के थे जो वापस चले गये थे। पहाड़ी पर पहुंचने पर पहले तो उन चारों ने मुझसे माफी मांगी और बताया कि गांव पहुंचने पर संरपच को मालूम चला तो संरपंच ने उन चारों को समझाया और चेतावनी दी कि वे लोग लोग सरकारी आदमियों को बीच जंगल में छोड़कर आ गये और अगर दोनों सरकारी आदमियों को कुछ हो गया तो वे लोग जेल में सड़ते रहेगें तथा जमानत भी नहीं मिलेगी।

इसी डर से वे लोग वापस आ गये और अब काम खत्म करके ही सबके साथ वापस जाएगें।

अन्त में यह कह कर अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ कि यदि मैंने दो रातें उस पहाड़ी पर चैन से बिता सका और जीपीएस प्रेक्षण सफलता पूर्वक पूरा कर सका तो हो सकता था कि यह सब अग्नि देव की मेहरबानी हो जिसके समक्ष मेरे साथी कर्मचारी ने या मन्त्रों का जाप किया था।

<u>कविता</u>

छाले पड़े हैं पांव में

कुमार आनन्द,सर्वेक्षक

(यह कविता मूलरूप से उन लोगों की संवेदना एवं पीड़ा से प्रेरित है जो कोरोना संक्रमण के कारण लगे लॉकडाउन के समय पैदल ही 1500 किमी से भी अधिक की यात्रा की एवं उनके पैर में पड़ें छाले आज भी मन में अमिट है)

आये हैं कुछ लोग मेरे गांव में
छाले पड़े है पांव में

गांव आकर भी जीवन मझधार की नाव में
छाले पड़े है पांव में

नेता-अधिकारी खोये है आपस कि कांव-कांव में
छाले पड़े है पांव में

पूरा देश पड़ा है एक लम्बी सी पीड़ा में
छाले पड़े है पांव में

सब कुछ खोया और अब जीवन भी है दांव में
छाले पड़े है पांव में

हर गावं मुहल्ला परिवार कुटुम्ब है तनाव में
छाले पड़े है पांव में

टूटा दिल बिखरे सपने कि बीतेगा जीवन सुख की छांव में
छाले पड़े है पांव में

छोड़ सारे सुख वैभव परदेश के, रहना है अपने ही गांव में
पडेंगें फिर कभी ना छाले किसी के पांव में। ।।

फील्ड आपदाएँ

पहाड़ी इलाके

लम्बाई कम होने के नुक्सान

ड्रोन से छेड़ छाड़ के नतीजे

बहुत अच्छी बन्दूक है भैया

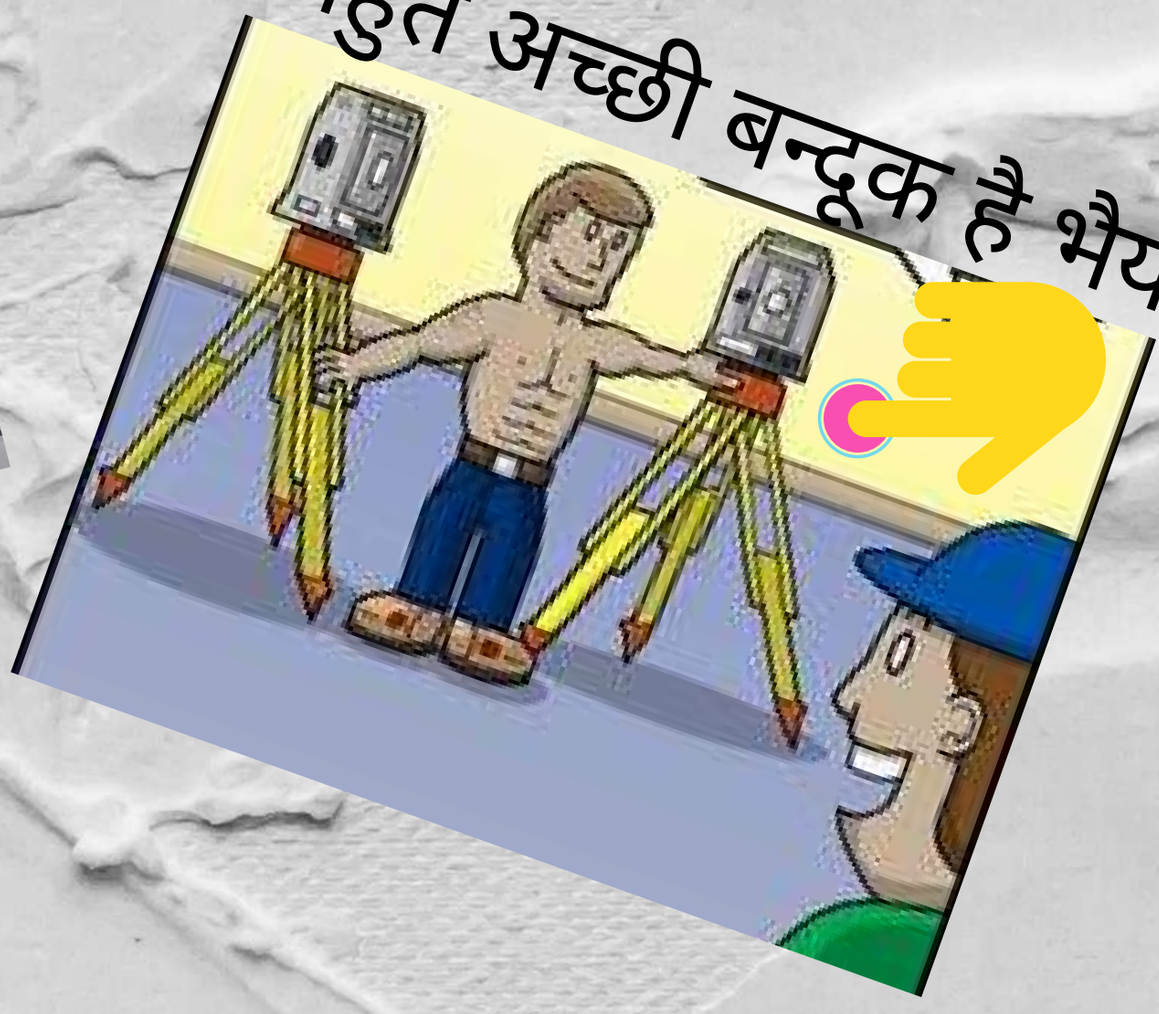

तुम यहाँ क्या कर रहे हो

हम तो बस सर्वे करने आये थे

कविता

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
नरेश सिंह सन्तोषी, सर्वेक्षण सहायक ,तकनीकी अनुभाग

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दिवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रंगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना नहीं अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुठ्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्षों का मैदान छोड़कर मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय-जय कार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता 2021 से चयनित निबंध

आजादी का अमृत महोत्सव

शिखा उनियाल, सर्वेक्षक

आजादी सिर्फ एक अवस्था नहीं है। आजादी का एक बहुत ही व्यापक अर्थ है हर मनुष्य, हर प्राणी के लिए। आजादी एक ऐसा शस्त्र है जो प्रत्येक मनुष्य के जीवन को, उसके व्यक्तित्व को निखार सकता है। आजादी मौका देती है हर व्यक्ति को अन्य किसी से भिन्न होने का ।

मेरे व्यक्तित्व में आज दम है
मेरी आवाज आज बुलन्द है
क्योंकि आज मैं आजाद हूँ
पर ये आजादी न एक खेल है
यह हमारे शहीदों के लहू का मोल है
सब कुछ सहा उन्होनें, बस एक ही था उनका नारा
कि गुलामी की जंजीरों से आजाद हो देश हमारा।

कई बरसों तक हमारा देश भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा। हर भारतीय ने भिन्न-भिन्न प्रकार की यातनाएं झेली। अग्रेंजो के क्रूर व्यवहार का सामना किया। परन्तु हमारे राष्ट्र-भक्तों ने कभी हार न मानी। न ही हमारे पास बड़े-बड़ें हथियार है और न ही कोई विशाल सेना, पर हमारे पास था देश को आजाद करने का एक सपना, अग्रेजों से खुद को आजाद कराने का संकल्प। इसी संकल्प के चलते,हमारे वीरोंने विभिन्न आंदोलन किये जिसके लिए उन्हें जेल जाना पड़ा, फांसी पर चढ़ा दिया गया, पर हमारे वीरों के साहस ने कभी दम न तोड़ा और इस दृढ़ संकल्प का ही नतीजा था कि 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ और प्रत्येक भारतीय गुलामी से रिहा हुआ।जिस आजादी का उदाहरण देकर हम आज अपना हर कार्य अपनी इच्छा से करते है, वह आजादी हमारे वीरों की धरोहर है। इस धरोहर के महत्व को जीवित रखने व आने वाले युवाओं में इसके प्रचार व महत्ता को बनाए रखने के लिए भारत सरकार ने ''आजादी का अमृत महोत्सव' मनाने का निर्णय लिया। भारतीय आजादी की 75वीं जयन्ती मनाने के लिए सरकार ने विभिन्न दिशा निर्देश दिए है।

''हर घर का उत्सव, हर मन का उत्सव आजादी का अमृत महोत्सव''

आजादी की अहमियत शायद तब ज्यादा समझ आती है जब वह हमारे पास नहीं होती। खुले आकाश में उड़ते हुए परिंदें को जब पिंजरे में बन्द कर दिया जाता है तो वह कैसे फड़फडाने लगता है।

एक व्यक्ति जब किसी अपराध के बाद (जेल) कारावास में बन्द कर दिया जाता है तब उसे आजादी की महत्ता समझ आती है। इसलिए यह जानना और मानना बहुत ही जरूरी है कि आजादी एक राष्ट्रीय पूंजी है।

अपनी राष्ट्रीय पूंजी को हमें बहुत ही सावधानीपूर्वक इस्तेमाल करना है। आज विभिन्न कार्यलयों में 'विद्यालयों और संस्थानों में 'आजादी का अमृत महोत्सव' मनाने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। आजादी के 75वी वर्षगांठ का जश्न तो इस महोत्सव का विशेष कारण है परन्तु इसके साथ-साथ आजादी की कीमत भी हर हिन्दुस्तानी के दिल दिमाग में रहे।

हमारे विभाग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में भी 'आजादी का अमृत महोत्सव' बड़ें ही धूम-धाम से मनाया जा रहा है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग के ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा के संग्रहालय को 'आजादी का अमृत महोत्सव' हेतु स्कूली बच्चों, कॉलेज के युवाओं व अन्य सभी लोगों के लिए लगभग एक हफ्ते तक खोला गया। ज्योडीय एंव अनुसंधान शाखा का यह संग्रहालय अपने आप में इतिहास की पूरी किताब समेटा हुआ है। सन् 1767 में स्थापित हमारा भारतीय सर्वेक्षण विभाग पूरे देश का सबसे पुराना विभाग है। विभिन्न जगह तक पहुंचने के लिए नक्शों की आवश्यकता होती थी जिसके लिए अंग्रेजो ने इस विभाग को स्थापित किया। सबसे पुराना विभाग होने के नाते हमारा संग्रहालय आजादी से भी पहले के यन्त्र एवं आंकड़ो को सहेजे हुए है। ये यन्त्र व आंकड़ें आम जनता को इतिहास की एक छोटी सी झलक तो देते ही है, साथ ही साथ हमारे युवाआ में इतिहास से वर्तमान तक पहुंचने का एक सफर भी बता देतें हैं। संग्रहालय में रखे यंत्रों को देश बच्चे, अभिभावक, शिक्षक आदि स्वंय को इतिहास की जानकारियो से ओत प्रोत पातें हैं।

इसके अलावा भी आजादी का अमृत महोत्सव बनाने के लिए भिन्न भिन्न स्तर पर कार्यक्रम चलतें रहतें हैं । अन्य कार्यालयों में भी इसका अलग अलग तरीकों से आयोजन हो रहे हैं।

इस महोत्सव को मनाते हुए हमें आजादी के महत्व को समझना चाहिए। आजादी के महत्व को समझना चाहिए। आजादी को हम दोनों तरीको से इस्तेमाल कर सकते हैं , या तो आजादी से खुद को संवार लें या फिर बिगाड़ लें। हर भारतीय नागरिक का यह कर्तव्य बनता है कि वह आजादी के असली महत्व और इसके पीछे के बलिदानों को समझे। फिर खुद को श्रेष्ठ बनाने के लिए इस आजादी का उपयोग करें ताकि हमारा देश भारत विश्व की ऊंचाइयों को छू सके और एक विकासशील देश से एक विकसित देश बन सके।

" आओ मिल कर प्रण लें कि आजादी का सबको महत्व समझाएगें
और फिर सभी भारतीय आजादी का अमृत महोत्सव मनाएगें "

कविता

पंडित नैन सिंह

पायल आर्य, सर्वेक्षक

1830 में ग्राम मिलम में जन्म, वो पता है
8 वर्ष की आयु में जो बिन माँ के रह जाता है
1863 में सर्वेक्षण का प्रशिक्षण, वो पता है
बांधे पैरो को निश्चित दूरी पर महीनो वो यूँही गुजारता है
तपती धूप और ढलती शाम में जो बस चलता जाता है
लेकर भेष जो लामा का कदमों से गिन कर मानचित्र बनाता है
अज्ञात हिमालय मार्गों से हम सबको अवगत कराता है
ऊँ मनी पदमे हुम की माला जो जपते जाता है
राज छुपाकर बौद्ध पहिया में जो भारत लाता है
तीन माह में तिब्बत की पहचान जो हमको कराता है
शौर्य वीरता की मिसाल जो बिन जीते न रुक पाता है
अपने काम की पहचान जो सारे जगत को कराता है
रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी द्वारा स्वर्ण पदक वो पाता है
जिसके आगे सारा सर्वेक्षण इज्जत से शीश झुकाता है
सर्वेक्षण का राजा वो पंडित नैन सिंह कहलाता है।

संस्मरण

मेरा पहला सर्वे फील्ड

डी0पी0एस0माटा, सेवा निवृत्त अधिकारी सर्वेक्षक

बात 1981 की है, जब मैं भारत के महान विभाग सर्वे ऑफ़ इण्डिया में नियुक्त हुआ था। सर्वे की ट्रेनिंग के पश्चात् मेरा पहला फील्ड अंडमान निकोबार द्वीप समूह, दक्षिण भारत तथा लक्षद्वीप टापुओं का था।

अक्टूबर1982 में अंडमान-निकोबार जाने के लिए सर्वप्रथम हमें देहरादून रेलवे स्टेशन से कलकत्ता जाने की ट्रेन में बैठना था। ट्रेन हावड़ा एक्सप्रैस थी, जो रात को देहरादून रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नं0 1से रवाना होती थी। मुझे याद है कि मेरे कैम्प ऑफिसर श्री पी0आर0 ब्रह्मचारी जी तथा मुझको, रेलवे स्टेशन पर विदा करने के लिए बहुत से दोस्त और रिश्तेदार आये थे। मेरे कम से कम 30-35 रिश्तेदार और परिवार के मित्र मुझे विदा करने रेलवे स्टेशन के प्लेट-फार्म पर खड़ें थे। उनमें से कुछ पंजाबी में कह रहे थे " साडा मुंडा पहली बार फील्ड जा रया है, इस दी सानू बहुत चिन्ता है, साडा मुंडा कबी बी ऐने लम्बे टूर ते कदी नहीं गया'' (हमें हमारे पुत्र की बहुत चिन्ता है, जो कभी घर से बाहर इतने लम्बे टूर पर कभी नहीं गया)

मेरे कैम्प आफिसर श्री पी0आर0 ब्रह्मचारी जी उनको समझा रहे थे, ''आप चिन्ता नकरें मैं हूँ न ।''

सच में पुराने समय में लोगों में कितना प्रेमऔर ममत्व था। मेरी आखों में इन सब आये हुए दोस्तों-रिश्तेदारों के लिए धन्यवाद के एवज में 'मोतीनुमा आंसू' थे।

ट्रेन के गार्ड साहब हरी झंडी दिखाते हुए व्हिसल मारते हैं। ट्रेन धीरे-धीरे प्लेटफार्म के मेहमानों से दूर जाने लगती है। मेरे प्लेटफार्म पर आये हुए रिश्तेदारों -दोस्तों की आंखे भी नम थी। धीरे-धीरे ट्रेन की गति बढ़ने लगती है और सभी लोग रेलवे स्टेशन पर एक-एक करके पीछे छूटते चले जाते है, बीती हुई यादों की तरह।

देहरादून से चलकर हम लगभग 30 घंटे बाद हावड़ा स्टेशन पहुंचते हैं। यहाँ से टैक्सी लेकर हम कलकत्ता स्थित अपने महान विभाग सर्वे ऑफ़ इण्डिया के वुड स्ट्रीट स्थित कार्यालय में पहुंचते हैं। यहां से हमें अपने अगले पड़ाव पोर्टब्लेयर (अंडमान निकोबार आइलैंड्स जाना था। उन दिनों पोर्ट ब्लेयर जाने के लिए हमें पानी के जहाज में इजाजत थी लेकिन उसके लिए रिजर्वेशन करानी होती थी। अतः हमें 10-12 दिन अपने कलकत्ता स्थित कार्यालय के ट्रांजिट कैम्प में ही रूकना पड़ा।

जहाज में रिजर्वेशन पक्की होने के पश्चात् हमें कलकत्ता स्थित खिदरीपुर बंदरगाह से पानी के जहाज की यात्रा पोर्ट ब्लेयर तक करनी थी। पानी के जहाज में बैठने का यह मेरा पहला अनुभव था। हमारे फील्ड स्टाफ ने मैगनेटिक सर्वे से सम्बन्धित सारे यंत्र जहाज में सुरक्षित रखवा दिये थे। ये शायद 1982 के अक्टूबर का महीना था।

सवेरे लगभग 6-7 बजे जहाज यात्रा के लिए रवाना हुआ। जहाज के आगे कुछ मीटर की दूरी पर पायलट बोट होती है जो पानी के जहाज के आगे कई किलोमीटर तक, पानी के जहाज के कप्तान का मार्गदशन तब तक बढ़ती रहती है, जब तक जहाज गहरे समुद्र में प्रवेश न कर जाये।

इस बीच बहुत ही मनमोहक दृश्य देखने को मिला। जैसे-जैसे पायलट नौका जहाज के आगे-आगे चल रही थी तो बहुत से सफेद बगुले झुंड में इकट्ठे होकर पायलट नौका के पीछे-पीछे उड़ रहे थे और हमारे से लगभग 100-200 मीटर की दूरी पर थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि शायद बगुले भी हमको विदा करने के लिए उड़ान भर रहे थे। यह दृश्य बहुत ही मनोहारी तथा प्रकृति प्रेमियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन रहा था। जब तक मुझे वास्तविकता पता चली तब तक मैं इस तथ्य से अनभिज्ञ था कि ये बेचारे बगुले अपने भोजन अर्थात् समुद्र की छोटी-छोटी मछलियों की तलाश में उड़ रहे थे जो कि पायलट बोट के द्वारा पानी को चीरते हुए बेचारी ऊपर आ रही थीं। पायलट बोट के द्वारा हमारे पानी के जहाज को गहरे समुद्र में पहुंचाकर वापिस बन्दरगाह पर लौटना था।लेकिन इतनी देर तक बगुलों को उड़ता देखना, हमारे लिए बहुत ही चित्ताकर्षक व सुकून देने वाला था। पायलट बोट के वापिस लौटते ही हमारे जहाज के आगे उड़ने वाले ये सफेद पंछी भी हमको अलविदा कहकर पायलट बोट के साथ-साथ ही कहीं दूर अदृश्य हो गये थे। अगले तीन दिन और तीन रात जहाज जिसका नाम 'हर्षवर्धन' था। बंगाल की खाड़ी के नीले समुद्र की गइराईयों को अनवरत चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था। चारों और सागर का नीला पानी और आकाश, क्षितिज की गोलाई पर एक दूसरे का परस्पर आलिंगन कर रहे थे। इस आलिंगन के बीच सूर्योदय और सूर्यास्त इस अनोखे मिलन में अपनी गुलाबी किरणों की चुनरिया तीन दिन तक इन दोनों को ओढ़ाकर प्रसन्न हो रहे थे।

रात होते ही गहरे समुद्र का दृश्य और भी भयावह हो जाता और तब ऐसा प्रतीत होता कि समुद्र देव अपनी पूरी ताकत से जहाज को झटके मार रहे थे। हम जैसे जहाज के नये यात्रियों के चेहरे की तो हवाईयां उड़ रही थी कि पता नहीं अगले पल क्या होगा लेकिन धीरे-धीरे निदियां रानी भी अपना असर दिखाने लगती थी । लेकिन जहाज के कप्तान और पूरी टीम हमेशा सावधान रहती, ताकि यात्री सुरक्षित अपने गन्तव्य पर पहुंच सके। सवेरा होते ही समुद्र में कई और मनोहारी दृश्य देखने को मिले थे। कई बार छोटी मछलियां ऐसे प्रतीत होतीहैं कि कुछ फीट तक उड़ रहीं हो।

उसका कारण है कि बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को निगलने के लिए उन पर हमला करती है। अतः बेचारी छोटी मछलियां बचने का प्रयास करती हैं। यही सिलसिला सदियों से प्रकृति के नियमों के अनुसार चल रहा था

इसके अतिरिक्त बंगाल की खाड़ी के इन्टरनेशनल जल क्षेत्र में कई दूसरे देशों के जहाज भी अपने-अपने देशों की आर्थिक और सामरिक हितों की रक्षा के लिए विचरण करते रहते है। इन दूसरे देशों के जहाजों के बीच बैठे हुए उन देशों के सिविल और नेवी व्यक्ति भी हमारे जहाज को दूर से आता देखकर खुश होते और अपने-अपने जहाजों की टीम के साथ, अपने-अपने जहाज का हॉर्न बजाकर हमारा स्वागत करते और जोर-जोर से खुश होकर चिल्लाते। इसका कारण है कि इन जहाजों में कई दिन तक बैठे-बैठे इनके सदस्यों को सी-सिकनेस हो जाती है। जिसको दूर करने के लिए ये कुछ मनोरंजन के क्षण ढूंढ लेते है। क्योंकि कई महीनों तक समुद्र के जहाज में बैठे रहना कोई सरल कार्य नही है। हमारे जहाज में शाम को तम्बोला भी खिलाया जाता था और पिक्चरें भी दिखाई जाती थी। ताकि यात्रीगण जो लगातार तीन दिन से जहाज में यात्रा कर रहे थे वह कुछ मनोरंजन प्राप्त कर सकें।

लगभग तीन दिन और तीन रातें समुद्र में गुजारने के बाद हमारा जहाज पोर्ट ब्लेयर के बंदरगाह पर पहुंच गया। अब यहां से हमने अगले दो महीने तक सात टापूओं पर जाना था और मैग्नेटिक सर्वे के कार्य को अंजाम तक पहुंचाना था। दूसरे टापूओं पर जाने के लिए पोर्ट ब्लेयर से छोटे-छोटे जहाज अथवा फेयरी सर्विस भी उपलब्ध रहती थी।पोर्ट ब्लेयर बहुत ही सुन्दर स्थान है । समुद्र की गहराईयों के बीच बसे कई टापुओं पर आपको छोटे-छोटे कम ऊंचाई वाले पर्वत भी दिखाई देते है जो कि घने जंगलों तथा शस्य श्यामला से परिपूर्ण है। इन सुदूरवर्ती टापुओं में आज भी कुछ आदिम जातियां जंगलों में निवास करती हैं। उनका पूरा रहन-सहन आदिमानव की तरह ही है। कुछ जातियां विलुप्त भी हो रही हैं। अतः सरकार ने इन क्षेत्रों में आम लोगों के जाने के लिए कुछ प्रतिबन्ध लगा दिये है। पोर्ट ब्लेयर में ऐतिहासिक सेलुलर जेल भी है जहां ब्रिटिश काल में भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे कैदियों को काले पानी की सजा दी जाती थी। इस जेल में फांसी के तख्ते भी है तथा कैदियों के लिए छोटे-छोटे सेल भी बनाये गये थे जहां वे यातनाओं भरा जीवन व्यतीत करते थे। इस जेल को अब राष्ट्रीयस्मारक में परिवर्तित कर दिया गया है और इसका उद्घाटन पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के समय में किया गया था। इस जेल से अपने देश के हितों के लिए अपने आपको ऊर्जावान बनाने की प्रेरणा ले सकते है।

आईये आप सब भी अंडमान निकोबार द्वीप समूह की यात्रा करें आपको सुकून मिलेगा।

कविता

मेरे पापा

किरन मनूरी,पटल चित्रक

क्यों छोड़ के मुझको चले गये तुम मेरे पापा
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
बचपन से रखा ख्याल हर एक चीज का
होने नहीं देते थे कमी कभी भी किसी एक चीज की
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
रहेगा अभिमान मुझे हमेशा मेरे पापा
पर रहते है साथ हमेशा मेरे पापा
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
करते अपार प्यार थे मुझको मेरे पापा
थे घर की आन बान शान और जाने मेरे पापा
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
मेरी हर तरक्की के पीछे हाथ तुम्हारा
रहता है साथ अब भी हमेशा आर्शीवाद तुम्हारा
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
तपती धूप में ठण्डी छाँव थे मेरे पापा
ठिठुरन भरी ठण्ड में सूरज की तीव्र धूप थे मेरे पापा
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
भगवान की दी हुई सबसे सुन्दर सौगात थे मेरे पापा
मेरे लिए तो भगवान से भी महान थे मेरे पापा
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
पाला एक गुडिया की तरह मेरे पापा ने
न रखने दिया जमीं पर एक भी कदम मेरे पापा ने
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
हर मुसीबत से लड़ना मुझे सिखलाया मेरे पापा ने
है क्या अच्छा क्या बुरा मुझे बतलाया मेरे पापा ने
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
न भूलूंगी कभी मैं मेरे पापा को
मिले हर जनम में मुझे मेरे पापा
थे जान से भी प्यारे मुझको मेरे पापा
थे दुनिया में सबसे प्यारे मेरे पापा
क्यों छोड़ के मुझको चले गये तुम मेरे पापा

<u>लेख</u>

काश

पायल आर्य,सर्वेक्षक

यह काश शब्द भी बड़ा अजीब है न दोस्तो, वो कहते है न '' अब पछताने से क्या फायदा जब चिड़िया चुग गई खेत'' मेरा लेख कुछ इसी मुहावरे को सही ठहराता है, वैसे तो मेरा उद्देश्य किसी को भी उनकी कार्य प्रणाली से भटकाना या पछतावा करवाने का बिल्कुल भी नहीं है, हाँ पर शायद कुछ तो सकारात्मक बदलाव आये इसके बाद। जी हाँ, आज मैं आपको अपने साथ ले चलती हूँ, किसी कहानी या कोई यात्रा का अनुभव लेने नहीं, बल्कि असल जिन्दगी से लिए गए तथ्यों के आधार पर कुछ सुनाने जा रही हूँ। चलिए आगे बढ़ते हैं।

यूं तो मुझे भी जिन्दगी का कुछ खास अनुभव नहीं है।किन्तु अगर कुछ नया और अच्छा सुनने, समझने और सीखने को मिल जाये तो कोशिश पूरी रहती है कि खुद तो सुनूं, सीखूँ और साथ में अपने मित्रों को भी उसका लाभ देने का प्रयास करूं। वो कहते है न 'किताबें आपकी बेस्ट फ्रेंड्स होती है' यह बात अब जाकर समझ आती है।

तो ये एक व्यक्तिगत अनुभव से जुडा किस्सा है ''ब्रॉनी वेयर'' जो कि एक आस्ट्रेलियाई नर्स है, जिसने अपने काम के साथ साथ जो बीमार रोगियों की सेवा के साथ साथ उनके अनुभवों को भी बटोरा हैं। ब्रॉनी वेयर हमेशा की तरह अपने बीमार रोगियों से बात किया करती थी। अब चूंकि वो एक नर्स थी वो भली भांति जानती थी की कौन सा रोगी अपने अन्तिम दौर पर चल रहा है, वो उन सबसे बात करती और उनके अनुभवों को कागज पर उतार देती। हंसी खुशी के पलों के साथ कुछ 5 ऐसी चीजे समाने आई जो कि सबमें एक जैसी पाई गई जो कि पछतावे के रूप में थी, जिसे मैं आपके समाने चन्द बिन्दुओं के रूप में अपने शब्दों और विचारों में प्रस्तुत करना चाहती हूँ, :-

1- काश मैं अपना जीवन अपने हिसाब से जीता न की औरों के मुताबिक।

कभी कभी लगता है, हम अपने लिए नहीं बल्कि औरों के सपनों एवं आशाओं पर खरे उतरने के लिए इस धरती पे जन्मे है। कभी माँ कभी बाप कभी बहन कभी भाई कभी पति तो कभी पत्नी। बस इतना ही नहीं एक सामाजिक व्यक्ति, न जाने इन सब में हम खुद कहां है। सबको खुश रखने की कोशिश में शायद हम अपनी खुशियां ही भूलने लगे है।

''खुश रहने का रहस्य स्वतन्त्रता है
और स्वतंत्रता का रहस्य साहस है''

यह उन सभी का सबसे आम अफसोस था। यह सत्य है, आजकल की भाग दौड़ भरी जिन्दगी में हम बस भागे जा रहे है, क्यों? किसलिए? इसकी स्पष्टता जाने बगैर और जब तक वो यह समझ पाते है और स्पष्ट रूप से पीछे मुडकर देखते है, तो दिखता है कि, कितने सपने अधूरे रह गए है। काफी लोग अपने अरमानो को ही नहीं समझ पाते है और औरो के मुताबिक़ अपने जीवन को जीते चले जाते है।

निष्कर्ष: यह आवश्यक है कि हम अपने परिजनों एवं आसपास के व्यक्तियों की खुशी का भरपूर खयाल रखें, किन्तु साथ ही साथ अपनी महत्ता न भूलें और खुद की खुशी का ख्याल भी स्वंय रखें।

2- काश मैंनें इतनी मेहनत न की होती-

यूं तो बचपन से हमें सिखाया गया है कि मेहनत करो मेहनत का फल मीठा होता है पर सोचने वाली बात यह है कि हम कितना फल खाने के इच्छुक है और क्यूँ। एक सफलता मिलती नहीं की हम दूसरे के पीछे भागने लगते है अरे भाई जरा रूकिए, ठहरिये। इस फल को बैठकर खाने का आनन्द तो उठा लीजिए वो कहते है न इंसान की ख्वाहिशों का कोई अन्त नहीं, आजकल हम एक खुशी को अच्छी तरह मना नहीं पाते तब तक दूसरी खुशी की उम्मीद में भागने लग जाते है। कुल मिलाकर ये समझिये हमारे पास अपनी खुशियों को गिनने का, सुकून से उसे जीने का वक्त नहीं हैं। यहां भी कुछ ऐसे ही अनुभव की बात की गई है, ब्रॉनी वेयर के अनुसार सबका यह कहना था कि वे समझ ही नहीं पाए की उन्होंनें इतनी मेहनत क्यों की, उन्होनें अपना अधिकांश जीवन एक कार्य अस्तित्व के ट्रेडमिल पर बिताने के लिए गहरा खेदव्यक्त किया।

निष्कर्ष - आगे बढ़ने के लिए मेहनत के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है, यह बात बिल्कुल सही है, किन्तु अनावश्यक की मेहनत या जरूरत से ज्यादा मेहनत आपका सुकून भी ले सकती है। मेहनत के बीच अपनी खुशियों एवं जो अच्छी चीजें, अच्छे पल हमें मिलें है उनकी सराहना करने तथा उन्हें जीने की भी आवश्यकता है।

3- काश मुझमें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का साहस होता -

वाणी ही एक माध्यम है जिस से हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करते है, और वो ही दबी रह जाये तो सोचिये व्यक्ति के अस्तित्व का क्या होगा, कई बार हम खामोश हो जाते है खुद को व्यक्त नहीं कर पाते कभी शान्ति बनाए रखने के लिए अपनी भावनाओं को दबा देते है तो कभी शायद डर से, जिसका नतीजा यह होता है कि वास्तव में हम जो बनने में सक्षम थे, वो बन नहीं पायें और कुछ और बन गए, कभी-कभी अभिव्यक्ति की कमी के कारण बहुत कुछ खो भी देते हैं, पर यह पूर्णतः निर्भर करता है अभिव्यक्ति के तरीके पर, यूं नहीं कि हम हर किसी के सामने खड़ें हो जाये लड़ने। यह साहस की कमी तमाम लोगों में देखी गई जो कि उनकी जीवन का 'काश' बन गया।

निष्कर्ष - अपनी भावनाओं को दायरों में व्यक्त करना उतना ही आवश्यक है जितना की सांस लेना, हर बार आप सबके सामने अच्छा इंसान बनने की चाह में अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते जिसकी आवश्यकता आपको बाद में महसूस होती है।

4. काश मैं अपने दोस्तों के सम्पर्क में रहता-

अक्सर देखा गया है कि हम अपनी निजी जिन्दगी में इतना डूब चुके है कि अपने दोस्तों को जो की कभी हमारे लिए एक कप में साथ चाय की चुस्की लिया करते थे, एक मूंगफली को बांटकर खाने वाले होते थे और मम्मी पापा की डांट से बचाने वाले हथियार हुआ करते थे उनको अब समय नहीं दे पाते। कभी काम आड़े आ जाता है तो कभी ये सोच कि मैं ही क्यों करूं फोन, इन सब चीजों से होता तो कुछ नहीं पर शायद बहुत कुछ होता है आपके बचपन के दोस्तों का कोई अन्य विकल्प नहीं है मान के चलिए इस तथ्य को।

ब्रॉनी वेयर के अनुसार "वे अपने निजी जीवन में इतना फंस गये थे की अपने प्रिय मित्रो को याद करना भी संभव नहीं हो पता था। उन सबको अपने मित्रो वो वक़्त न दे पाने का बहुत ज्यादा अफ़सोस भी जो हकदार थे वो भी और जो नहीं थे वो भी कुल मिलकर यह समझिये के दोस्तों के प्रति उनकी संवेदना अंतिम वक़्त में व्यक्त हो रही थी जिसका उन्हें बेहद अफ़सोस हो रहा था। ’

‘‘वक्त के पन्ने पलटकर फिर से हंसी लम्हें जीने को दिल चाहता है
कभी मुस्कुराते थे सभी दोस्त मिलकर
अब उन्हें साथ देखने को दिल तरस जाता है’’

निष्कर्ष - यूं तो पैदा होते ही हमें बहुत सारे रिश्ते मिल जाते है लेकिन दोस्ती का रिश्ता हम खुद से बनाते है, कई बार बहुत सी बातें ऐसी होती है जो कि हम मात्र अपने मित्रों से ही साझा करना पसंद करते है और वो हमें भलीभांति समझ भी पाते है। ऐसे में आवश्यकता है कि हम अपने काम के बीच उन्हें अवश्य याद करें।

5- काश मैंनें खुद को खुश रहने दिया होता-

परिवर्तन ही जीवन का मूल आधार है या यह समझिए बदलाव जीवन का हिस्सा है‘‘या तो बदलिए या फिर लुप्त हो जाइये’’ बहुतों को अन्त तक यह एहसास नहीं हुआ कि खुशी एक विकल्प है। वे एक ही धारणा और कार्य प्रणाली को लेकर चल रहे थे और उसी में फस गए थे, परिवर्तन का डर कुछ इस तरह बस गया उनमें कि वे अपने में ही उलझे रहे। आज के दौर की बात करें तो कितना कुछ बदल चुका है आज से 20 साल पीछे के मुकाबले किन्तु सत्य तो यही है, हमें वक्त के हिसाब से खुद को भी थोड़ा बदलने की आवश्यकता है। समय उसी का है जो समय के साथ चलते है अन्यथा वो बहुत पीछे छूट जाते है, और देखा जाये तो आज के दौर में ये हो ही रहा है कुछ बदलना नहीं चाहते कुछ पुरानी धारणा छोड़ना नहीं चाहते परिणाम स्वरुप निराशा का शिकार हो जाते है।

“जिन्दगी को खुश रहकर जियो, क्योंकि हर शाम सूरज के साथ आपकी अनमोल जिन्दगी भी ढलती है”

निष्कर्ष -अतीत के पन्नों को छोड़कर आगे बढने वाला ही एक सुखी जीवन का अनुभव कर सकता है, जो व्यक्ति अपने अतीत के दुखों से जुड़ा और जकड़ा रहता है उन्हें अक्सर दुख का सामना करना पड़ा है। ‘बीत गई सो बात गई’ यदि हम इन पक्तियों को ध्यान में रखे तो काफी कुछ बदला जा सकता है। निष्कर्ष -अतीत के पन्नों को छोड़कर आगे बढने वाला ही एक सुखी जीवन का अनुभव कर सकता है, जो व्यक्ति अपने अतीत के दुखों से जुड़ा और जकड़ा रहता है उन्हें अक्सर दुख का सामना करना पड़ा है। ‘बीत गई सो बात गई’ यदि हम इन पंक्तियों को ध्यान में रखें तो काफी कुछ बदला जा सकता है।

अन्त में मुझे ज्यादा कुछ तो नहीं कहना है बस उम्मीद करती हूँ कि आप भी इन बातों पर थोड़ा सा तो विचार अवश्य करेंगें। सच मानिए मेरी छोटी सी विशलिस्ट है जिसें मैं समय पर पूरा करती हूँ । अरे ठहरिये जरा, विशलिस्ट से मेरा मतलब बड़ी उपलब्धियां नहीं। उसमें देर रात मूवी देखना, पहली बारिश में दोस्तों के साथ स्कूटी पे निकलना, ऊंचे पहाड़ियों में जाकर खुलकर हंसना चिल्लाना, अपनी पंसदीदा ड्रेस लेना, मूवी का फ़र्स्ट शो देखना और भी काफी कुछ जोड़ा जा सकता है, वो आप अपने हिसाब से जोड़िए। देखिये मेरी तो खुद की विश लिस्ट है जो कि मैं नहीं बताने वाली। आप खुद की लिस्ट बनाये और उसे पूरा जरूर करें, एक और बात पूरा करने के बाद उसका आनन्द लेना न भूले।

“जीवन में सब कुछ आपके अनुरूप हो या फिर आपको सब कुछ मिले यह जरूरी नहीं, किन्तु मेरी तो बस इतनी सी ख्वाइश है, कि जीवन के अन्तिम क्षणों में मेरे और किसी के भी मुख से ‘’काश’’ न निकले।

कविता

मैं ही बड़ा हूँ

सूबेदार मेजर प्रेम आर्य (सेवा निवृत)
पिता कुमारी पायल आर्य,सर्वेक्षक

मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
जल का वितरण निस्वार्थ भाव से सबको मैं ही करता हूँ
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
मैं नहीं तो प्राणी न होगा, प्राण वायु मैं ही फैलाता हूँ
मैं ही तो हूँ जग में एक, जो जीवन दान देता हूँ
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
मैं ही तो हूँ सुन रे मानव वायु शुद्धि जो करता हूँ
प्रदूषण, आंधी तूफ़ान से तुमको मैं बचाता हूँ
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
छाँव प्रदान करके मानव को भीषण गर्मी से बचाता हूँ
कट जाता हूँ, मिट जाता हूँ, आंसू भी बहाता हूँ
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
मेरे आंसू पी-पी कर खुद की प्यास बुझाते हो
और पल भर में ही मेरे मानव मुझको भूल भी जाते हो
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
कुल्हाड़ी लेकर मेरी छाँव में, गर्मी में सुस्ताते हो
कुछ ही पल में जग जाने पर वार मुझी पर करते हो
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
संरक्षक हूँ मैं तो तुम्हारा मुझको ही मिटाते हो
अपने आने वाली पीढ़ी को क्या तुम देकर जाते हो
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
मैं नहीं तो सुन रे मानव, मैं नहीं तुम ही तड़पोगे
नीर नहीं तो हे रे मानव जीवित कैसे रह पाओगे
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
मैं अगर रहा नहीं जग में तो भोजन कहाँ से पाओगे
भोजन पानी चिल्लओगे तड़प तड़प कर रह जाओगे
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ
मैं नहीं तो हे रे मानव ये धरा अग्नि का गोला है
नीर नहीं तो चारो तरफ ही अग्नि का शोला है
मैं ही बड़ा हूँ जग में मानव मूक भाव से कहता हूँ

<u>कविता</u>

ऐ काश !

रुचि प्रिया,प्रवर श्रेणी
लिपिक,यू0के0जी0डी0सी0

ऐ काश !
होती मैं भगवान, मेरे खुद के लिए,
लिखती मैं तकदीर, मेरे खुद के लिए,
समेट कर खुशियां, सारे जमाने की,
रखती पास बैठा, मेरे खुद के लिए,

यही सोचती रहती थी जब गम मे दिन और रात,
तब ही आ कर बोल गई, मुझसे ही मेरी बात,
अरे सुन !
तू ही तो भगवान, तेरे खुद के लिए,
कर सकती तू हर काम, तेरे खुद के लिए,
क्यों ढूंढे तू खुशियां, सारे जमाने में
जब तू ही तेरे साथ, तेरे खुद के लिए,

कविता

भावनाओं का आंचल

क्षितिज प्रकाश,पुत्र श्री जगदीश प्रकाश (यन्त्र यांत्रिक एच0एस0)

दुनिया में मैं तुम्हारी ही कोख से आया था मां
भूख से रोता रहा तो तुमने दूध पिलाया था मां
मुझे रोता देख तुमने अपने सीने से लगया था मां
तुम्हारे सीने से लगते ही मैं खिलखिलाकर मुस्कुराया था मां।

बचपन से आज तक तुम हर फर्ज निभाती हो मां
हम मुसीबत में हो तो तुम नजर आती हो मां
घर देर से आओ तो बेचैन हो जाती हो मां
आज भी हमारे रोने पे तुम चुप कराती हो मां

हमारे लिए ही तो तुम अपनी ख़्वाहिश दबाती हो मां
हमें अक्सर दो रोटी खिलाकर खुद आधी रोटी खाती हो मां
बताओ न समझौता कर के भूख कैसे मिटाती हो मां
ये वो राज है जो तुम हमसे छुपाती हो मां

अपने काम के चलते हमसे दूर रहकर समय बिताती थी मां
बचपन में हमारे लिए ही तुम इतने धक्के खाती थी मां
कैसे बताऊ कि किस कदर तुम्हारी याद आती थी मां
तुम्हारी कमी ही तो सबसे ज्यादा खलती थी मां

तारे तोड़कर ले आऊं अगर तुम मांगती मां
लेकिन मुझे ही तो तुम अपना तारा बताती हो मां
तुम्हारी तारे को तोड़ने की बात कंरू तो तुम घबराती हो मां
क्योंकि मामूली खरोंच भी तुम नहीं सह पाती हो मां

हमारे चोट लगने पर तुम छुपकर आंसू बहती हो मां
बुखार में दवा के लिए खाना जबरदस्ती खिलाती हो मां
सर गरम होने पर ठंडी पट्टी लगाती हो मां
दवा असर न करे तो ढेरों नुस्खे आजमाती हो मां

खुद की तबियत कैसी है? यह ठीक से नहीं बताती हो मां
कह कर सब ठीक है, तुम नज़रें चुराती हो मां
दु:खी होकर भी हमें दिखाने के लिए मुस्कुराती हो मां
लेकिन तुम झूठ भी समझदारी से कहां बोल पाती हो मां

दुनिया में कुछ लोग ऐसे कदम क्यों उठाते हैं मां
अपनी ही मां को वृद्धा आश्रम क्यों पहुंचाते हैं मां
बुढापे में बेसहारा बनाकर ऐसे दिन क्यों दिखाते हैं मां
जिस मां ने पाला उसी मां को क्यों ठुकराते हैं मां

प्रेरक प्रसंग

जीवन को जीना'-एक कला यह भी

प्रस्तुतकर्ता: दीपक कुमार, कनिष्ठ हिंदी अनुवाद अधिकारी

एक सूफी फकीर हुआ-जिनका नाम जुन्नैद था। एक रात, वह एक गांव में भटक गया। अधिक रात हो जाने के कारण उस गांव की धर्मशालाएं भी बन्द हो गई थी। चलते-चलते अंधेरे रास्ते में, जुन्नैद को गांव में एक आदमी मिला। जुन्नैद ने उस व्यक्ति को कहा 'मैं एक फकीर हूँ। अब कहां रूकूं, मुझे कुछ पता नही। जिसका पता ठिकाना मेरे पास था उसे मैं खोज रहा हूँ, लेकिन मिल नहीं रहा। कुछ भूल-चूक हो गई है। क्या तुम मुझे कुछ सहारा दोगे?'

उस आदमी ने कहा 'देखिये' मैं एक चोर हूँ। मैं अपने काम पर निकल रहा हूँ और आप एक फकीर हैं , इसलिए मेरा आपसे सच बोल देना उचित होगा। मेरे घर पर आप रुक सकते हैं ,लेकिन याद रहे कि यह एक चोर का घर है।'

फकीर थोड़ा डरा।यही जिन्दगी की मुसीबत है कि यहां चोर ज्यादा मजबूत और फकीर कमजोर है। चोर भयभीत नहीं है फकीर को घर में बुलाने से, बल्कि फकीर भयभीत है चोर के घर जाने से। लेकिन फिर उसे ख्याल भी आया, कि वह तो बड़ा होशियार आदमी है। उसे यह भी ख्याल आया कि वह डर रहा है और चोर नहीं डर रहा है। वह नहीं घबराता कि कहीं यह फकीर, उसे फकीर न बना लें। तो फिर वह क्यूं घबरा रहा है कि यह चोर उसे चोर न बना लें। जरूर उसके भीतर कहीं चोर छिपा है और वही भय का कारण है। उसने कहा-

' मैं तुम्हारे घर चलता हूँ। क्या फर्क पड़ता है। सब घर बराबर हैं, और तुमने तो बड़ें प्रेम से मुझे निमंत्रण दिया है । तो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।'

जुन्नैद उस चोर के घर एक महीने रुका।बाद में, जुन्नैद कहता था कि वह चोर तो बड़ा से भी बड़ा गुरु सिद्ध हुआ। वह रोज रात जाता और सुबह के करीब लौटता । जब वह वापिस आता, तो वह दरवाजा खोलता और उससे पूछता- 'कुछ सफलता मिली? वह कहता- ''आज तो नहीं मिली, लेकिन कल जरूर मिलेगी।' उसे, उसने कभी निराश नहीं देखा। वह हमेशा आशा से भरा था और कभी उसे थका हुआ नहीं पाया। हर रात वह उतने ही आनन्द से फिर चोरी के लिए जाता था जैसे कल गया था और हर सुबह खाली हाथ लौटता था। उसके पूछने पर वह कहता 'कोई फिक्र न करें, आज नही तो कल सही।'

जुन्नैद ने कहा था कि जब वह परमात्मा को खोजने लगा,तो उसकी हालत उस चोर जैसे हो गयी थी। वह रोज खोजता और हाथ कुछ न आता। रात-रात भर जागता, प्रार्थना करता और नाम स्मरण करता। पर कोई स्वाद न आता, अथवा कोई अनुभव न मिलता। कई बार फकीर जुन्नैद ने सोचा कि छोड़ो, यह सब बकवास है। यह परमात्मा और यह खोज कुछ भी नहीं है।

लौट चलो संसार में। तभी उसे उस चोर की याद आती और वह उसे द्वार पर खड़ा देखता, आशा से भरा और वह कहता 'आज नहीं तो कल सही'।
फकीर उस चोर के कथन 'आज नहीं तो कल सही' के अनुसार कोशिश करता रहा और एक दिन जब परमात्मा उसे मिल गया तो उसका पहला धन्यवाद उस चोर के लिए था, क्योंकि वही उसका गुरु था।
अगर तुम सीखना जानते हो तो चोर से भी सीख लोगे और अगर तुम सीखना नहीं जानते तो परमात्मा के पास से भी खाली हाथ लौट जाओगे। यह तुम्हारी सीखने की कला पर निर्भर करता है, और 'विपरीत' परिस्थितियों में प्रवेश किये बिना कोई नहीं सीखता। यहां (संसार में) सब गलत हो रहा है ,उस से तुम घबराओं मत। उस गलत को समझो। उस गलत को जैसे-जैसे तुम समझोगे, तुम्हारे भीतर का कांटा अपनी जगह पर लौटने लगेगा। जैसे-जैसे गलत तुम्हें साफ होने लगेगा, वैसे -वैसे सही पर तुम स्थिर होने लगोगे।
संसार एक विद्यालय है। अनुभव के बिना कोई भी सीखता नहीं है। भटकाव से भी आदमी में समझ पैदा होती है। गलत करके भी आदमी ठीक करने की कला सीखता है। भूल-भूल कर मंजिल पास आती है। भटक-भटक कर मार्ग मिलता है। और तुम जितनी भटकन से गुजरोगे, उतना निखरोगे। बस एक ही बात याद रहे कि उस भटकन को भी होशपूर्वक जीना, समझ के जीना, उसको भी निचोड़ लेना, उस में से भी सार निकाल लेना।
"यह भी जीने की एक कला है।"

<u>कविता</u>

मेरी फिक्र

पायल आर्य,सर्वेक्षक

देर हो गई है मुझको आज घर जाने में, कोई इंतजार करता होगा
दरवाजे पे टकटकी लगाये कोई मेरे दीदार को तरसता होगा
घर पहुचंने पर मीठी सी डांट तो जरूर मिलेगी
खैर छोड़ों, उसके बाद एक गरम प्याली चाय भी तो ज़रूर मिलेगी

सुबह एक रोटी कम खाने का हिसाब कुछ यूं देना होगा
अब रात के खाने में एक रोटी ज्यादा लेना होगा
बालों पर तेल की चम्पी के साथ कान खिचाई तो होगी
और आगे से घर वक्त पे आने की कुछ हिदायत भी होगी

देर रात मोबाइल की जलती लाईट देख
जल्दी सोने के फायदों की चर्चा कुछ देर तक हर रोज होगी
उसके हर जिक्र में फिक्र मेरी ही होगी
घर में कुछ भी कम हो, पर कमी मेरे खाने पे न होगी

बिन कम्बल सो जाने पे भी आंखे खुलने पे तन पे कम्बल जरूर होगा
दोस्तों, मुझे चुपके से देखने रात को कोई तो कमरे में आया होगा
चांद तारों की गिनती में मेरा नाम शामिल हर रोज होगा
हूं मैं सबसे काबिल, ये चर्चा पड़ोसन से बार बार होगा

ठिठुरन भरी ठण्ड हो या तपती गर्मी साल भर नहीं लेती कोई अवकाश
न जाने दोस्तों क्यों होती है सबकी मां दुनिया में इतनी खास
न जाने कब मेरे लिए उसे ये बताना आसान होगा
मां तुम हो बहुत खास और जहां में तुमसा न कोई होगा

संस्मरण

रद्दी का ढेर

डी0पी0एस0माटा, सेवा निवृत्त अधिकारी सर्वेक्षक

आज कई वर्षों बाद मैं सवेरे से ही अपने घर में पड़ी पुरानी रद्दी के ढेर को छांट रहा था कि बेकार के कागजो को फेंक सकूं। लेकिन जैसे-जैसे मैं रद्दी के ढेर को खंगाल रहा था ऐसा लग रहा था, मानो कोई कागज फेंकने वाला है ही नहीं। सभी से मेरी कोई न कोई याद जुड़ी हुई थी। इन पुरानी यादों की किश्ती में सवार होकर मैं अतीत के चलचित्र को देखने लगा।मेरे स्वर्गवासी माताजी ने मुझे मेरे फील्ड में रहते हुए कई पत्र लिखे थे, जिसमें लिखा था ''फील्ड में अपना ध्यान रखना, खाना-पीना ठीक-ठाक खाना और टाइम से खाना, बेटा बाजार से कोई भी चीज फालतू न खाना, मुझे तेरी बहुत चिन्ता रहती है, भगवान तेरे अंग-संग सहायी हो''

आज भी ये शब्द मेरे मन मस्तिष्क को झिंझोड़ कर रख देते है। उस जमाने में सर्वे के टैन्ट में लालटेन जलाने की सुविधा थी, जिसमें शाम को फील्ड से वापिस आकर पेपर वर्क लालटेन की रोशनी में ही निपटाना होता था।

मेरे विवाह के बाद मेरी धर्मपत्नी मुझे फील्ड में पत्र लिखती थी 'फील्ड में ध्यान से रहना, टाइम से खाना-पीना और अपनी सेहत का ख्याल रखना।'

मैं जो भी पत्र अपनी माताजी और पत्नी को लिखता था, उसमें मैं अक्सर उनको यही नसीहत देता था कि अपनी-अपनी दवाई समय पर लेते रहना''। उन दिनों घर में अक्सर पम्प वाले या बत्ती वाले स्टोव होते थे। मेरे घर की छत पर अक्सर बिल्ली के बच्चे खेलते रहते थे । वे सर्दियों में छलांग लगाकर, हमारे घर के आंगन में आ जाते थे और स्टोव के पास आकर बैठ जाते थे कि कुछ सर्दी से राहत मिल सके।

मुझे फील्ड में भी अपनी माता और पत्नी के अलावा इन बिल्ली के बच्चों की चिन्ता रहती थी, और मैं लिखता था कि 'कालू और पीलू' (बिल्ली के बच्चों के नाम) को भी दूध देते रहना, कहीं भूखे वापिस न चले जाये।'

जब पत्नी और माताजी मुझको फील्ड में खत लिखते तो मुझे ताना मारते, अरे 'तुमको तो हमारे से ज्यादा बिल्लियों की चिन्ता रहती है'' मुझे फिर उनसे क्षमा मांगनी पड़ती और लिखना पड़ता 'अरे वो भी तो भगवान के जन्तु है, और हमारे पर ही निर्भर है, उनका भी ख्याल रखना हमारा फर्ज है।'

उस जमाने में हम टैन्ट में रखी लालटेन की रोशनी में फील्ड की काग़ज़ी कार्रवाई प्रतिदिन निपटाते थे और एक-एक चिठ्ठी जो घर से आती थी, उसे बार-बार पढ़ते थे। क्योंकि दूसरी चिठ्ठी आने में 15-20 दिन लग जाते थे। मेरी माताजी और पत्नी दोनों ही धार्मिक प्रवृत्ति की महिलाएं थी। वो रोज सुबह घर का कामकाज निपटाकर, गुरूद्वारे जातीं और गुरूवाणी का पाठ करतीं थीं। इन दोनों के सादगी के जीवन की छाप मुझ पर भी कुछ हद तक पड़ी थी।

मेरी माताजी रोज सुबह पांच छः बजे कौवों को छत पर रोटी डालतीं थीं। उस जमाने में हमारे घर की छत टीन की होती थी। एक के बाद एक-एक करके कौवों की कांय-कांय के साथ पूरी छत गूंजने लगती थी। माताजी का स्वर्गवास होने पर मेरी धर्मपत्नी ने इस परम्परा को अनवरत जारी रखा। रद्दी के ढेर में आज भी बहुत सी चिठ्यिां पड़ी हुई है, जिन्हें मैं इस जीवन में जब भी फेंकने की सोचूं तो शायद न फेंक पाऊ।

आज भले ही मेरी माताजी और धर्मपत्नी इस दुनिया में नहीं है। लेकिन इन पुरानी रद्दी के ढेर में छिपी अनमोल यादें आज भी मेरे साथ हैं जिन्हें मैं कभी फेंक नहीं पाऊंगा।

सच में पुराने रद्दी के ढेरों में हर घर में कोई न कोई अनमोल यादें छिपी रहती है। जिन्हें पढ़कर हमें एक नई ऊर्जा और शक्ति मिलती है। इन्हें संजोये रखने में बहुत सकून मिलता है। उस जमाने में आज की तरह मोबाइल नहीं थे। लेकिन पुरानी चिठ्ठी को बार-बार पढ़नें का आनन्द ही कुछ और था, जिनसे हम प्रेरणा ले सकते हैं और अपनी जीवन में उत्साह का संचार कर सकते है।

<u>कविता</u>

मंजिल राह ताक रही है

रुचि प्रिया,प्रवर श्रेणी लिपिक,यू0के0जी0डी0सी0

ना थक के बैठ तू राही, मंजिल राह ताक रही है।
सोच प्रवाहिनी के पदचल को कोई भूधर रोक पाया है क्या ?
सिंध से उसके मिलन को कोई विचलित कर पाया है क्या ?

निरन्तरता की शक्ति ही तुझको तेरे मंजिल तक पहुंचाएगी,
ना थक के बैठ तू राही, मंजिल राह ताक रही है।

सोच प्रस्तर की कठोरता भी क्या कुंभ की कोमलता को सह पायी है,
तू तो फिर भी मनुज पुत्र है, जिसकी दुश्वरता को ये वसुन्धरा भी जान पायी है,

ना थक के बैठ तू राही, मंजिल राह ताक रही है।

फिर प्रज्जवलित कर खुद को, कर की प्रखरता को नई धार दे,
नित नई संभावनाएं फिर पत्र तेरा चूमेंगी
ना थक के बैठ तू राही, मंजिल राह ताक रही है।

<u>यात्रा वृतांत</u>

मेरी केरल यात्रा
अरुण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक

केरल घूमने की इच्छा बहुत दिनों से थी। यह राज्य अपने स्वच्छ समुद्र तटों तथा सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों के लिए तो प्रसिद्ध है साथ ही साथ इसे सबसे अधिक साक्षर राज्य होने का भी गौरव प्राप्त है। कुछ समय पूर्व इस राज्य में बारिश और बाढ़ ने भयंकर तबाही मचाई थी। लेकिन कुशल प्रबंधन द्वारा उस तबाही के निशान बहुत कम समय में मिटा दिए गए। इसके साथ ही साथ हाल में आए कोरोना संक्रमण को कम समय में नियन्त्रित कर लेने के कारण यह राज्य चर्चा में आया था। मैं सपरिवार 18 दिसम्बर 2021 की रात केरल के बंदरगाह और वाणिज्यिक नगर कोच्चि पहुंचा। कोच्चि केरल का सबसे बड़ा शहर है।

प्राचीनकाल में यह नगर मसालों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। यहां से अरब, चीन रोम, पुर्तगाल, इंग्लैण्ड, डच आदि जगहों को मसालों का निर्यात होता था। आज भी इस काल के अवशेष देखें जाते हैं, जिन्हें 'मुजरिस' कहा जाता है।कोच्चि दो भागों में विभक्त है महानगर के रूप में विकसित क्षेत्र अर्नाकुलम तथा बंदरगाह क्षेत्र कोच्चि। केरल की पुरानी संस्कृति और प्राकृतिक सुन्दरता का आनन्द लेने के लिए कोच्चि का ही क्षेत्र है। मैंने कोच्चि के फोर्ट कोच्चि क्षेत्र के एक होम-स्टे में अग्रिम बुकिंग करवा लिया था। इस क्षेत्र में यूरोपीय धर्म और दर्शन का प्रभाव है। यहां पर कई चर्च हैं, जिनमें अधिकांश तीन चार सौ साल पुराने है। इन पर यूरोप के विभिन्न संस्कृतियों जैसे कि पुर्तगाली, डच, रोमन आदि के प्रभाव देखे जा सकते है।

कोच्चि शहर कई छोटे-छोटे द्वीपों को मिला कर बना है।यह द्वीप आपस में पुल द्वारा भी जुड़ें है और इन तक स्टीमर और नाव द्वारा भी पहुंचा जा सकता है। कोच्चि में कभी अच्छी खासी संख्या में यहूदी रहा करते थे। इसके प्रमाण के रूप में एक जियूज टाउन के अवशेष यहां पर है। हम लोग अगले दिन अर्थात् 19 दिसम्बर को इस क्षेत्र में गये। सात आठ सौ साल पहले इस कालोनी में यहूदियों की अच्छी खासी संख्या बसती थी पर अब इन घरों में एक भी यहूदी नहीं रहता। इन घरों को भारतीयलोगों ने ,जिनमें से अधिकांश केरल के बाहर के लोग थे, इन घरों को खरीद कर इनमें पर्यटक की रूचि के हिसाब से दुकानें खोल ली है। उनकी दुकानों पर बिकने वाले सामान बहुत मंहगें और खास विदेशी पर्यटकों की रूचि के थे।

उस समय कोरोना संक्रमण के कारण विदेशी पर्यटकों पर रोक लगी थी। अतः इन दुकानों पर सन्नाटा पसरा था। जियूज टाउन में यहूदियों काएक मन्दिर भी है, जिसे सेनागॉग कहा जाता है। इस सेनागाग का निर्माण सोलहवीं शताब्दी में हुआ था। इस मन्दिर में बेल्जियम में निर्मित रंगीन काँच का उपयोग हुआ है जो इतने सालों बाद भी सुन्दर लगते है। फोर्ट कोच्चि में सात आठ सौ साल पुराना एक डच कब्रिस्तान है जो कि यहां पर कभी डच लोगों के होने का प्रमाण है। कोच्चि में कई देशों के व्यापारी यहां आते थे और अपने धर्म और संस्कृति का प्रभाव छोड़कर जाते थे। लेकिन इन तमाम संस्कृतियों पर पुर्तगाली संस्कृति ही सब पर हावी दिखती है। यहां के दुकानों के नाम पुर्तगाली शब्दों से बने है।बहुत सारे पुर्तगाली व्यंजन भी यहां के रेस्तंरा के मैन्यू में मिल जायेंगें, परन्तु फोर्ट कोच्चि में शाकाहारी रेस्तंरा कम है। हमारे होमस्टे के शुल्क में सुबह का नाश्ता सम्मिलित था। अतः हम सुबह अच्छा खासा नाश्ता करके घूमने निकल जाते थे। फोर्ट कोच्चि में एक सैंट फ्रांसिस चर्च है, जिसका निर्माण सन् 1503 में हुआ था।यह भारत में यूरोपीय लोगों द्वारा निर्मित प्राचीनतम चर्च में से एक है। फोर्ट कोच्चि में रुकने का फायदा है कि घूमने की सारी जगह आसपास ही है। उन जगहों को तो पैदल ही घूमा जा सकता है।

नुकसान यह है कि एयरपोर्ट और रेलवे स्टेशन यहां सेदूर है। हम उन्नीस दिसम्बर को अपने होम स्टे पर लौट रहे थे तो रास्ते में एक घर पर लगे बोर्ड पर हमारा ध्यान गया। उस बोर्ड पर कथकली नृत्य की पोशाक और मुखौटा पहने एक कलाकार का चित्र था और उसमें लाइव शो का समय और टिकट का दाम लिखा था। कथकली केरल राज्य की प्रमुख नृत्य शैली है जो अपने नर्तकों के रंग बिरगें परिधान और मुखौटे के लिए विश्व विख्यात है। हर नृत्य में कोई न कोई एक पौराणिक कथा रहती है इसलिए इसका नाम कथ कली है। कथकली का जो रूप आज है वह लगभग चार सौ साल पुराना है। लेकिन इसका आरम्भ और भी पहले हुआ था। केरल में बाहर से, खासकर विदेशों से आने वाले पर्यटकों के लिए इसका लाइव शो देखना, उनके पर्यटन का अनिवार्य हिस्सा रहता है। चूंकि कोरोना संक्रमण के कारण विदेशी पर्यटकों की आवाजाही पर रोक लगी थी। अतः हमें उम्मीद नहीं थी कि हमें कथकली का नृत्य देखने का मौका मिल सकेगा। बोर्ड पर एक मोबाइल नंबर लिखा था मैनें इस नम्बर पर सम्पर्क किया और विस्तृत विवरण लेने लगा। मुझे बताया गया कि कथकली नृत्य इस मकान के बगल से जा रही गली में होगा। दर्शकों की संख्या सीमित थी और कुछ ही टिकट बचे थे। हम लोग गली में बढ़ते गए। गली पतली थी। उसे देखकर देहरादून के करनपुर या धामावाला की गलियों की याद आ गई। मन आशंकित हो गया कि इस गली के कथकली नृत्य का क्या स्तर होगा? गली में आगे जाकर एक बड़ा सा परम्पारिक शैली में बना घर आया। उस पर वही कथकली का बोर्ड लगा था। यह वही जगह थी जहां कथकली का कार्यक्रम होना था। केरल में इन जगहों को मंडपम कहा जाता है। जिसका आकार प्रेक्षागृहों से छोटा होता हे। इसमें पचास साठ लोग या अधिक से अधिक सौ लोगों के बैठने की क्षमता होती है। इस मंडपम में अधिक से अधिक पचास साठ लोग बैठ सकते थे, लेकिन कोविड संक्रमण के कारण सामाजिक दूरी के नियमों का पालन करते हुए इसमें तीस कुर्सिया लगी थी। इसलिए टिकट भी मंहगा रखा गया था। करीब एक घंटे के प्रदर्शन के लिए मुझे प्रति व्यक्ति 500/- रूपये देने पडें थे। लेकिन तसल्ली मिली थी कि टिकट मिल गया था और उसके बाद सिर्फ दो ही टिकट शेष थे। नृत्य के आरम्भ स पहले हमें यह बताया गया कि कथकली नृत्य में मेकअप की जो सामग्रियां तैयार की जाती है उन्हें प्राकृति पदार्थों जैसे पत्थर, मिट्टी, वनस्पतियां आदि से प्राप्त किया जाता है।

सैंट फ्रांसिस चर्च के भीतर का दृश्य

कथकली नृत्य

मंच पर एक व्यक्ति उन सामग्रियां को लिए बैठा था। वह एक एक सामग्री को उठाकर दर्शकों को दिखाता था और फिर उनसे रंग प्राप्त करने के काम में लग जाता था। जब मेकअप में इस्तेमाल हेतु सारे रंग तैयार हो गए तो उसने उन रंगों को हाथ में लगाकर दर्शकों को भी दिखाया। सौन्दर्य प्रसाधन में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों के तैयार होने के थोड़ी देर बाद कथकली नृत्य का परिधान और मुखौटा पहने एक नर्तक मंच पर आया। उस नर्तक ने नृत्य के दौरान विभिन्न भावों को व्यक्त करने के लिए धारण किए जाने वाली विभिन्न मुद्राओं का प्रदर्शन किया ताकि जब कथकली नृत्य आरम्भ हो तो दर्शकों को समझने में कोई दिक्कत न हो। इसके पश्चात् कथकली का नृत्य आरम्भ हुआ। इस कथकली नृत्य का शीर्षक था 'नरकासुर वध'। यह भागवत पुराण में उल्लेखित एक घटना पर अधारित था।

जिसका नाट्य रूपान्तरण अठाहरवीं शताब्दी में प्रख्यात राजा कार्तिक थिरूवनल द्वारा किया गया था।

इसमें अत्याचारी दैत्य नरकासुर के वध की कथा को नृत्य द्वारा कहा गया था। इस कथा के अनुसार नरकासुर इतना शक्तिशाली और भयानक दैत्य था जिससे स्वर्ग के राजा इन्द्र भी भयभीत रहते थे। अन्त में भगवान कृष्ण अपनी पत्नी सत्यभामा के साथ उस राक्षस का वध करके उसके अत्याचारों से धरती और स्वर्ग को मुक्ति दिलाते है। एक घन्टे के इस नृत्य में कुल चार दृश्य थे। चारों दृश्यों का मंचन इतना उत्कृष्ट था कि दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे। इस तरह से उन्नीस दिसम्बर की सुबह से जो हमारी व्यस्तता आरम्भ हुई थी वह रात में आठ बजे समाप्त हुई। दिन भर हम लोग घूमते रहने के कारण बहुत थक गये थे और हमने निश्चय किया था कि अगले दिन यानी 20 दिसम्बर को फोर्ट कोच्चि के आस-पास ही भ्रमण किया जाए। 20 दिसम्बर 2021 को हमने अपना अधिकांश समय कोच्चि के प्रसिद्ध बीच 'गांधी बीच' पर बिताया। इस समुद्र तट पर चहल पहल ज्यादा थी। यहां पर हमने चीन के फिशिंग नेट देखे। आस पास स्थित कुछ और चर्च, ऐतिहासिक भवनों आदि को भी देखने गए, जिन्हें पिछले दिन नहीं देख पाये थे। वहां हमारी एक स्थानीय साहित्यकार क्रिस्टी से मुलाकात हुई जिन्होनें अपनी कार से हमें अर्नाकुलम और कोच्चि के विभिन्न द्वीपों की सैर करायी और अर्नाकुलम के एकदम अंदरूनी हिस्से में स्थित विभिन्न गोवों का भी पर्यटन कराया। एक द्वीप पर जाने के लिए हमें कार से एक बैकवाटर नदी के किनारे उतरना पड़ा था। जहां से हम स्टीमर द्वारा उस द्वीप पर पहुंच पाये थे। इस द्वीप पर नारियल वृक्षों की भरमार थी। इस द्वीप की अंदरूनी सड़क बहुत अच्छी थी। केरल के अंदरूनी भागों का भ्रमण करते हुए हमने यह पाया कि यहाँ मूलभूत संरचनायें जैसे सड़क बिजली आदि कि अच्छी व्यवस्था है। सड़कों पर गन्दगी मैंने कहीं नहीं देखी। उसके बाद वे सज्जन जो अपनी कार से हमारा भ्रमण करा रहे थे, हमें अपने घर लेकर गये। उनके घर के चारों ओर खुली जमीन थी। जिसमें नारियल, आम आदि के पेड़ लगे थे, लेकिन घर के बाहर चारदीवारी नहीं थी।

मैनें इस बाबत उनसे पूछा तो उन्होनें बताया कि उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि कभी उनके बाहर पड़ें सामानों जैसे कार, मोटर साइकिल आदि से कोई समान चोरी नहीं हुआ। जबकि उनकी मोटर साइकिल बहुत ही उम्दा किस्म की थी जिससे वे सम्पूर्ण भारतवर्ष की यात्रायें कर चुके थे और इन यात्राओं पर उनके बहुत से यात्रा विवरण, संस्मरण आदि प्रकाशित हो चुके थे। उनके घर में एक छोटा सा कुंआ भी था। केरल के प्रायः हर समृद्ध घर में एक कुंआ हुआ करता था, जिससे उन्हें पीने का मीठा पानी प्राप्त होता था, उनका घर पेरीयार नदी के किनारे था। उस वक्त पेरियार नदी में एक स्टीमर चल रहा था। दूर छोटी नाव पर सवार होकर कुछ लोग मछलियां पकड़ रहे थे। नदी बहुत शान्त आवेगहीन थी। उन्होंने बताया कि दो वर्ष पूर्व इसी पेरियार नदी में आयी बाढ़ ने आसपास के क्षेत्रों में भंयकर तबाही मचायी थी। यहां तक कि उनके घर तक भी इस नदी का पानी आ गया था जबकि उनका घर इस नदी से लगभग एक किलोमीटर दूर था। उन्होनें आसपास कुछ निशान दिखाये जो कि इस नदी में आये बाढ़ के प्रमाण थे। आदि से प्राप्त किया जाता है। मंच पर एक व्यक्ति उन सामग्रियां को लिए बैठा था। वह एक एक सामग्री को उठाकर दर्शकों को दिखाता था और फिर उनसे रंग प्राप्त करने के काम में लग जाता था। जब मेकअप में इस्तेमाल हेतु सारे रंग तैयार हो गए तो उसने उन रंगों को हाथ में लगाकर दर्शकों को भी दिखाया। सौन्दर्य प्रसाधन में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों के तैयार होने के थोड़ी देर बाद कथकली नृत्य का परिधान और मुखौटा पहने एक नर्तक मंच पर आया। उस नर्तक ने नृत्य के दौरान विभिन्न भावों को व्यक्त करने के लिए धारण किए जाने वाली विभिन्न मुद्राओं का प्रदर्शन किया ताकि जब कथकली नृत्य आरम्भ हो तो दर्शकों को समझने में कोई दिक्कत न हो। इसके पश्चात् कथकली का नृत्य आरम्भ हुआ। इस कथकली नृत्य का शीर्षक था 'नरकासुर वध'। यह भागवत पुराण में उल्लेखित एक घटना पर अधारित था। जिसका नाट्य रूपान्तरण अठाहरवीं शताब्दी में प्रख्यात राजा कार्तिक थिरूवनल द्वारा किया गया था।

इस तरह से उन्नीस दिसम्बर की सुबह से जो हमारी व्यस्तता आरम्भ हुई थी वह रात में आठ बजे समाप्त हुई। दिन भर हम लोग घूमते रहने के कारण बहुत थक गये थे और हमने निश्चय किया था कि अगले दिन यानी 20 दिसम्बर को फोर्ट कोच्चि के आस-पास ही भ्रमण किया जाए। 20 दिसम्बर 2021 को हमने अपना अधिकांश समय कोच्चि के प्रसिद्ध बीच 'गांधी बीच' पर बिताया। इस समुद्र तट पर चहल पहल ज्यादा थी। यहां पर हमने चीन के फिशिंग नेट देखे। आस पास स्थित कुछ और चर्च, ऐतिहासिक भवनों आदि को भी देखने गए, जिन्हें पिछले दिन नहीं देख पाये थे। वहां हमारी एक स्थानीय साहित्यकार क्रिस्टी से मुलाकात हुई जिन्होनें अपनी कार से हमें अर्नाकुलम और कोच्चि के विभिन्न द्वीपों की सैर करायी और अर्नाकुलम के एकदम अंदरूनी हिस्से में स्थित विभिन्न गोवों का भी पर्यटन कराया। उन सज्जन ने अपनी कार से हमें फोर्ट कोच्चि स्थित होमस्टे तक छोड़ दिया। अगर सफर में ऐसे सहृदयी सज्जन लोग मिल जाये तो यात्रा का मजा दुगना हो जाता है।

अगले दिन अर्थात् 21 दिसम्बर को हम लोगों ने अर्नाकुलम जाने का निश्चय कर लिया था। आरम्भ में हमारा इरादा बस से जाने का था। लेकिन होमस्टे के स्वामी ने हमें स्टीमर से जाने की सलाह दी। उसका कहना था बस में अर्नाकुलम जाने में कम से कम डेढ़ घन्टे लगते। क्योंकि सड़कों पर अक्सर जाम लग जाता है और बस भी विभिन्न तय ठहरावों पर रुक-रुक कर चलती। इसके बनिस्पत स्टीमर से जाना अधिक आसान और किफायती था। हम लोग दस बजे स्टीमर प्वांइट पर पहुंच गए। वहां पर कामकाजी लोगों की थोड़ी बहुत भीड़ थी। स्टीमर का टिकट मात्र दस रूपये का था और हम पन्द्रह मिनट के अन्दर ही अर्नाकुलम पहुंच गए। न जाम की समस्या न जगह-जगह सवारियां चढ़ाने उतारने का झंझट। हम समुद्र की ठण्डी हवाओ को सुख लेते हुए अर्नाकुलम के स्टीमर प्वाइंट पर पहुंच गए। अर्नाकुलम तेजी से विकसित होता हुआ महानगर हैं, जहां स्थानीय लोगों के अतिरिक्त दूसरे राज्यों विशेष कर उत्तर भारतीयों की भी अच्छी खासी संख्या दिख जाती है। दिल्ली, मुम्बई की भांति यहां पर गगनचुंबी आवासीय अपार्टमेन्ट देखे जा सकते है। किसी भी राज्य का आर्थिक विकास वहां के नगरों या महानगरों के स्वरूप सें आंका जा सकता है। अर्नाकुलम आकर हमें इस बात का एहसास हुआ कि केरल ने अपने परम्पराओं को संरक्षित रखते हुए सर्वागींण विकास किया है। अर्नाकुलम आकर यहां के बाजार और शापिंग काम्पलेक्स देखने का अवसर मिला। खरीददारी के लिए ब्राडवे और महात्मा गांधी मार्ग, सबसे मुफीद जगहें हैं। यहां पर बडे-बड़ें शोरूम तथा हर तरह की दुकानें है। ब्राडवे के पास ही स्थित है, ऐतिहासिक दरबार हाल, जहां कभी कोच्चि के राजा का दरबार लगा करता था। इसे अब चित्रकला केन्द्र बना दिया गया है। जिसके विभिन्न कक्षों में देश प्रदेश के चित्रकारों के चित्रों की प्रदर्शनियां लगा करतीं है।जब हम दरबार हाल पहुंचे तो वहां पर केरल की प्रसिद्ध चित्रकार सुनिजा के0 सी0 के चित्रों की प्रदर्शनी लगी थी। केरल म्यूरेल चित्रकारी में सुनिजा के0सी0एक जाना पहचाना नाम है। लेकिन इस बार उन्होंने लीक से हटकर कुछ नया किया था। उन्होनें मलयालम कलासिक उपन्यास 'इन्दुलेखा' को म्यूरेल चित्रकारी के माध्यम से दर्शाया था। भारतीय चित्रकला में रामायण, महाभारत, पौराणिक ग्रन्थों में उल्लेखित नायक नायिकाओं, या कथाओं को कैनवास या कागज पर चित्रित करने की परम्परा पुरानी है। यहां तक कि संस्कृत भाषा के क्लासिक ग्रन्थों जैसे मेघदूत आदि के प्रसंगों को भी भारतीय चित्रकारों द्वारा कैनवास पर स्थान दिया जाता है, लेकिन सुनिजा के0सी0 ने म्यरेल चित्रकारी के माध्यम से आधुनिक मलयालम क्लासिक 'इन्दुलेखा' की कथा को अपनी चित्रकारी से व्यक्त किया था।

ऐतिहासिक दरबार हाल

दरबार हाल के अंदर कला प्रदर्शनी

हम जब दरबार हॉल में इन चित्रों का अवलोकन कर रहे थे तो अच्छी खासी संख्या में लोग इस आर्ट गैलरी में उपस्थित थे। दरबार हाल में कई आर्ट गैलरियां है। सारी गैलरियां घूमते-घूमते, जितना सोचा था इससे ज्यादा ही समय हो गया था। चिन्ता इसी बात की थी कि अर्नाकुलम से फोर्ट कोच्चि जाने वाले स्टीमर की अन्तिम रवानगी रात नौ बजे थी। हमें जो कुछ भी घूमना शेष था, उसे जल्दी जल्दी निपटा कर साढ़े आठ बजे तक स्टीमर प्वाइंट पहुंच जाना था। सो अर्नाकुलम घूमने के बाद हम आटो लेकर आठ बजते बजते जेट्टी तक पहुंच गए। वहां पर फोर्ट कोच्चि के लिए अन्तिम स्टीमर खड़ा था।

22 दिसम्बर की सुबह हम अलेपी जाने की तैयारी करने लगे थे। अलेपी पुराना नाम है , नया नाम है, अलपुझा। केरल में ज्यादातर नगरों के पुराने नाम बदलकर नये नाम रखें गए हैं। जैसे त्रिवेन्द्रम का तिरूअनंतपुरम, कालीकट का कोझिकोड, अलेपी का अलपुझा। यहां का समुद्र तट लक्षद्वीप सागर से लगा है और क्षेत्र अपने विस्तृत बैकवाटर क्षेत्र के लिए जाना जाता है। अलेपी नगर हाउसबोट पर्यटन के लिए लोकप्रिय है। यहां छोटे बड़ें हाउस बोट, बैक वाटर में तैरते हुए मिलेंगें। मैनें एक हाउसबोट की अग्रिम बुकिंग कराई हुई थी। हमने टैक्सी द्वारा वहां जाना तय किया। टैक्सी की यात्रा आनन्द दायक थी। कोच्चि से अलेपी जाने के दो मार्ग है। एक तो राष्ट्रीय राजमार्ग है तो दूसरा समुद्रतटीय मार्ग। टैक्सी वाला हमें समुद्र के किनारे वाले रास्ते से ले गया जिससे समुद्रतटीय गांवों को नजदीक से देखने का अवसर मिला। ये गांव ज्यादातर मछुआरों के थे। सुबह के समय लोग काम पर जाने को सड़कों पर निकले थे। अतः सड़कों पर खूब चहल पहल थी। समुद्र के किनारे चलने के कारण समुद्र को छूती हुई ठंडी हवा के झोकें से हमारी तबियत खुश हो जाती थी हम लोग ग्यारह बजे से पहले ही बैक वाटर के किनारे उस स्थान पर पहुंच गए जहां पर हमारा हाउस बोट लंगर डाले खड़ा था। हाउस बोट से दो लोग हमारी आवाभगत के लिए बाहर आए और हमारा सामान लेकर हाउसबोट में चले गए। हाउस बोट में प्रवेश करते ही हम इसकी भव्यता से अभिभूत हो गए।

अलेपी में हाउस बोट का आनंद

हाउस बोट काफी बड़ा था और दूर से देखने में लकड़ी की हवेली जैसा लग रहा था। इसमें साफ सुथरे दो कमरे थे। कमरे अच्छी तरह से सुसज्जित थे और प्रत्येक में शौचालय एवं स्नानघर अलग-अलग था। इस हाउस बोट के पिछले भाग में अच्छा खासा रसोईघर था और अग्रभाग में लम्बी चैड़ी डेक थी जिसे ड्राइंग-कम-डाइनिंग कक्ष का रूप दिया था। डेक में एक म्यूजिक सिस्टम लगा था। जिसमें मधुर फिल्मी गीत बज रहा था। हमें ड्रिडिंगरूम में लगे सोफे पर बैठाया गया और मधुर शीतल पेय पेश किया गया। हाउस बोट केवल हमारे परिवार के लिए आरक्षित था। वैसे इसमें दो परिवार भी समायोजित हो सकते थे। मैंनें पास में इतने बड़ें हाउसबोट भी देखे जिसमें पन्द्रह बीस लोगों के ठहरने की भी गुंजाईश थी। हमारा हाउसबोट सबसे छोटी श्रेणी का था। मधुर पेय के पश्चात् चाय नाश्ता आया। उसके पश्चात् हाउस बोट की रस्सी खोली गई और उसका इंजन स्टार्ट हो गया। हाउस वोट चलने लागा, हाउस बोट में हमारे अलावा दो लोग रह गए थे। एक तो हाउस बोट चलाने वाला नाविक तथा दूसरा रसोईया। हाउसबोट धीरे-धीरे बैक वाटर में चलने लगा और हमें नींद आने लगी थी। मैं हाउस बोट के नाविक से बात करने लगा था। उसे केरल के बारे में खास कर अलेपी के बारे अच्छी जानकारियां थीं। उससे बातचीत करते-करते काफी देर हो गयी और बीच दोपहर का भोजन तैयार हो गया था। हम भी खाने की मेज पर पहुंच गए। रसोईये ने खाने की मेज को भिन्न भिन्न व्यंजनों से सजा दिया था। व्यंजन इतने थे कि खाने की पूरी मेज भर गई थी। मेज पर रोटी, चावल पूड़ी, तीन किस्म की सब्जियां, राजमा, सलाद, रस्म, सेंवई और भी दो एक व्यंजन थे जो मुझे याद नहीं आ रहे । चूंकि बुकिंग राशि में हाउस बोट में ठहरना खाना, पीना सभी शामिल थी अतः हम इतने सारे व्यंजन देखकर चिंता में नहीं थे कि इनका भुगतान करना होगा। हमारी मांग पर दोपहर का भोजन शाकाहारी रखा गया था और यह था मुख्यतः उत्तर भारतीय भोजन।

जिसका स्वाद उतना ही उत्तम था जितना हमें उत्तर भारत के किसी भी रेस्तरां में मिलता। खाने के बाद फल खाने को दिया गया। इसके बाद मैं ड्राईंग रूम में पड़ें सोफे पर पसर गया। सोफे पर लेटे लेटे आस-पास के द्वीपों का नजारा लेने लगा। बैक वाटर में छोटे-छोटे कई द्वीप थे कुछ इतने छोटे थे कि उनमें आठ दस घर ही थे तो कुछ इतने बड़ें थे कि एक मुहल्ले जैसी आबादी थी। कुछ द्वीप निर्जन थे। निर्जन द्वीपों में अक्सर पानी चला जाता था। इसलिए उन द्वीपों पर कोई नहीं रहता। लेकिन खेतीबारी जितना सम्भव हो, उतनी की जाती है। नाविक ने कहा कि रात में दुर्घटना आदि को रोकने के लिए हाउसबोट को चलने की मनाही रहती है। इसलिए सभी हाउसबोट किसी न किसी जगह लंगर डालने को बढ़ने लगे थे। मैं डेक में मौजूद सोफे पर बैठ कर आराम करने लगा था। इस वक्त पूरा बैक वाटर शान्त था। इस बीच रसोईया रात के खाने की तैयारी करने लगा था। सारे व्यंजन को मेज पर सजा लेने के पश्चात् उसने हमें खाने पर आमंत्रित किया। खाने के पश्चात् हम कुछ देर डेक पर बैठे रहे। आस-पास जितने हाउसबोट लंगर डाले पड़ें थे उनमें अब कोई हलचल नहीं थी।

सभी पर्यटक अब थक गए थे। हम भी काफी थके हुए थे और फिर हम लोग सोने चले गए। सुबह हमारे उठने से पहले ही हाउस बोट चलने लगा था। मेरे कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई और रसोइये ने आवाज देकर बताया कि बाहर चाय रख दी गयी है। हम लोग सुबह की चाय पीने डेक पर आ जाए। मेज पर चाय की केतली, प्याले चीनी वगैरह सामग्रियां रखी हुई थी। हम चाय की घूँट भरते हुए बैक वाटर पर सुबह-सुबह की गतिविधियों का नजारा लेने लगे। सारे हाउस बोट अब वापस लौटने लगे थे जब तक हम नहा- धोकर तरो ताजा हुए तब तक सुबह का नाश्ता तैयार था। सुबह का नाश्ता, दक्षिण भारतीय था अर्थात् उत्पम और इडली बड़ा, साथ में हलवा भी।ये द्वीप देश के मुख्य भूमि से कटे हुए थे। इनके लिए आवागमन का साधन नाव ही है। हर द्वीप के किनारे नाव बंधी थी। मेरा ख्याल था द्वीप पर घरों के हिसाब से नाव थी, जैसे मुख्य भूमि पर लोगों के घरों के सामने चैपहिया या दुपहिया वाहन खड़ें रहते है या और भी पुराने समय की बात करें, जिस तरह से समृद्ध शाली लोगों के घर के सामने घोड़ें बंधे रहते थे। मैंने देखा कि कोई नाव में सीमेंट, सरिया आदि निर्माण सामग्री लेकर जा रहा था शायद उसे अपने घर में निर्माण सम्बन्धी कार्य करवाना होगा। एक नाव वाला किस्म-किस्म की सब्जियां सजाये हुए एक द्वीप से दूसरे द्वीप बेचने के उद्देश्य से जा रहा था। एक नाव वाला लाउडस्पीकर लगा कर आईसक्रीम बेच रहा था। वह कभी इधर उधर फैले द्वीपों की ओर जा रहा था तो कभी बैकवाटर में चल रहे हाउसबोटों की ओर जा रहा था। कुछ लोग उससे आईसक्रीम खरीद भी रहे थे। वह आईसक्रीम वाला हमारी ओर भी आया था। यह दृश्य हमारे लिए अद्भुत था। इसी तरह दिन ढलने तक हम समुद्रीय जीवन के विभिन्न दृश्यों का आनन्द लेते रहे। दूर पश्चिम में सूरज क्षितिज की ओर झुका जा रहा था।

इसका प्रतिबिम्ब समुद्र में पड़ कर ढलते सूरज की रोशनी बढ़ा दे रही थी। इस बीच हमारे सामने चाय प्रस्तुत कर दी गयी और हम चाय की घूँट भरते हुए समुद्र के ऊपर उड़ रहे पक्षियों को देखने लगे। इस बीच नाविक ने हाउसबोट को एक द्वीप के किनारे बांध दिया। यह द्वीप छोटा था और आठ दस घर थे। इस द्वीप में मछलियों की एक दुकान थी। इस दुकान में समुद्र मे पाये जाने वाली मछलियों की विभिन्न किस्में थी। ताजी-ताजी चमकीली मछलियों की ऐसी किस्में थीं जिनमें से मैं एक को भी नहीं पहचानता था सिवाए झींगा मछली के। मैं रसोइये के साथ हाउसबोट से उतर कर उस दुकान में पहुंच गया। रसोइये ने मेरे से कोई एक मछली चुनने को कहा जिसे वह रात में मेरे लिए पका सके। मैं तो रोहू मछली खाने का शौकीन था। देहरादून में रोहू, कतला, सिंघाड़ा आदि मछलियां मिलती हैं जिनमें से इन दुकान में एक भी नहीं थी। तब मैनें रसोइये से पूछा कि उत्तर भारत से आने वाले पर्यटक मुख्यतः कौन सी मछली पंसद करते हैं तो उसने एक मछली की ओर इशारा किया यह पम्फ्रेट मछली थी।

मैनें एक छोटी पम्फ्रेट मछली चुन ली। मुझे मालूम था कि पम्फ्रेट मछली बहुत मंहगी होती है, परन्तु मुझे चूंकि खाने के लिए किसी भी सामान का अलग से भुगतान नहीं करना था इसलिए निश्चित रहा। हम लोग मछली लेकर वापस हाउसबोट में आ गए। थोड़ी देर में हमें सूप पीने को दिया गया जो कि बहुत चट्पटा और शाकाहारी था। जब लगभग अंधेरा हो गया तो हाउस बोट को किसी द्वीप से बांध दिया गया।कालीकट, अलेपी और कोच्चि के दक्षिण में स्थित एक और महत्वपूर्ण समुद्र तटीय नगर है। यह वही जगह है जहां पर पुर्तगाली अन्वेषक वास्को डि गामा सबसे पहले उतरा था। कोच्चि के मुकाबले यहां पर्यटक कम आते है। लेकिन यह भी एक सुन्दर जगह है जहां विदेशी आक्रमणकारियो और व्यपारियों के हस्तक्षेप के बावजूद भारतीय परम्परा और संस्कृति अक्षुण बनी है। यहां मैं अपने एक परिचित का आतिथ्य स्वीकार करते हुए उनके घर में ही रुका था। उन्होनें कालीकट पहुंचने से पूर्व ही हमें भ्रमण कराने के उद्देश्य से दर्शनीय स्थानों की सूची बना ली थी सबसे पहले तो वे हमें उसी जगह लेकर गए जहां वास्को डि गामा सबसे पहले उतरा था।

यह समुद्र के किनारे का एक गांव था जहां पर उस जगह पर एक पत्थर लगा दिया गया था। प्राचीन काल में कालीकट का समुद्र तट एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र हुआ करता था। दूर देश के व्यापारी मसालों के आकर्षण में यहां आते और मसालों के बदले में बहुमूल्य वस्तुयें जैसे सोना चांदी हीरे जवाहरात आदि यहां के राजा को सुपुर्द करके चले जाते। 20 मई 1498 को पुर्तगाल सें भारत पहुंचने वाला वास्को डि गामा केवल व्यापारिक मंतव्य से नहीं अपितु दमन और शासन करने की कुत्सित महत्वाकांक्षाओं के साथ आया था। बारूद के साथ आने वाला वह पहला विदेशी था। इसी से पता चलता था कि उसके इरादे कितने खतरनाक थे। कहा जाता है कि वास्को डि गामा जब पहली बार भारत आया था तो उसने अपने पूरे जहाजी बेड़ें को भारतीय मसाले, विशेषकर काली मिर्च से भरकर वापस लौटा था। विदेशों में काली मिर्च की बहुत मांग होती है क्योंकि धरती पर पायी जाने वाली तमाम प्राकृतिक सम्पदाओं में सबसे अधिक प्रभावकारी बचावक (प्रिजरवेटिव) होती है और पश्चिमी देशों में खाद्य पदार्थों विशेषकर मांस आदि को ज्यादा दिनों तक सुरक्षित रखने के लिए इसकी बहुत मांग होती थी।

कालीकट में वह जगह जहाँ पहली बार वास्को डि गामा उतरा था

कालीकट का ऐतिहासिक ताली मंदिर

यह कहा जाता है कि जब वास्को डि गामा यूरोप गया तो भारत से अपने साथ ले गए इन काली मिर्च को बेचकर इतनी सम्पत्ति अर्जित कर ली थी जो उसके इस तरह के तीन जहाजी यात्राओं पर आए कुल व्यय को बराबर थी। कालीकट में हम ऐतिहासिक ताली मन्दिर को भी देखने गए थे। यह शिव मन्दिर है। सोने चांदी के लोभ में वास्को डि गामा के सैनिकों द्वारा इस मन्दिर पर आक्रमण किया गया था। लेकिन जमूरिन राजा की सेनाओं के जबरदस्त प्रतिरोध के कारण वह अपने मकसद में कामयाब न हो पाया था। कालीकट के मेरे मित्र, हमें वहाँ से थोड़ी दूर स्थित बेपुर में ऐसी जगह लेकर गए जहां पुराने पारंपरिक किस्म के जहाज बनते थे। हम जब वहां पर पहुंचे तो वहां पर एक जहाज का निर्माण चल रहा था। कारीगर लोग विभिन्न स्तरों पर अपना काम कर रहे थे। वहां हमारी मुलाकात जहाज निर्माण कम्पनी के मालिक हामिद हाशिम से हुई।

बेपुर में जहाज का निर्माण

उन्होनें हमारा स्वागत गर्मजोशी से किया। उन्होनें यह जानकारी दी कि उनके परिवार में यह काम लगभग सौ सालों से हो रहा है। प्रारम्भ में इनके यहां बहुत काम होता था और इस तरह के जहाजों की मांग दूर-दूर स्थित तटीय देशों में होती थी। उनके यहां बने जहाजों का आकार स्वरूप प्राचीन जहाजों जैसा होता है और ये प्राचीन तकनीक द्वारा ही बनाये जाते है। इन जहाजों का कोई वाणिज्यिक या व्यवहारिक उपयोग नहीं होता बल्कि बड़ें-बड़ें धन कुबेर अपनी शान शौकत के लिए इन जहाजों को बनवाते है।

24 दिसम्बर 2021 तक हमने कालीकट को पूरी तरह घूम लिया था। 25 दिसम्बर 2021 का दिन हमने अपने मित्र के साथ खरीदारी के लिए रखा था और उसके 26 दिसम्बर 2021 को करेल से देहरादून के लिए रवाना हो गए।

झलक पत्रिका २०२३.